वर्ष-9//अंक-10//जुलाई 2022

ISSN 2454–5805

₹20/-

आम आदमी पत्रिका®

एक आम इंसान की सोच

RNI NO.: CHHHIN/2013/50684

नॉर्थ ईस्ट में मोदी के 5 साल

तीन साल में भूपेश ने बदला छत्तीसगढ़

» 10

मलेरिया मुक्ति की ओर अग्रसर

» 12

तेन्दूपत्ता संग्रहण से समृद्धि

» 21

गोबर से बनने लगा प्राकृतिक पेंट और पुट्टी

आम आदमी पत्रिका

वर्ष-9//अंक-10//जून 2022

प्रबंध संपादक	: उमेश के बंसी
सर्कुलेशन इंचार्ज	: प्रकाश बंसी
रिपोर्टर	: नेहा श्रीवास्तव
कंटेंट राईटर	: प्रशांत पारीक
क्रिएटिव डिजाइनर	: देवेन्द्र देवांगन
मैग्ज़ीन डिज़ाइनर	: युनिक ग्राफिक्स
मार्केटिंग मैनेजर	: किरण नायक
एडमिनिस्ट्रेशन	: निरूपमा मिश्रा
अकाउंट असिस्टेंट	: प्रियंका सिंह
ऑफिस कॉर्डिनेटर	: योगेन्द्र बिसेन

प्रधान कार्यालय

965/1 कक्कड़ चौक, श्याम नगर रोड,
कटोरा तालाब,रायपुर, छत्तीसगढ़

फोन : 0771-4044047

ईल : khabar@aamaadmi.in

कार्यालय

प्लाट नं.118, कंचन बाग, राजनांदगांव

प्रकाशक

उमेश कुमार बंसी, क्वाटर नंबर 10, एम.एम.
रियल स्टेट कॉलोनी, अमलीडीह, रायपुर
(छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं मुद्रित

विशेष- इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में दिये गए विचार, लेखकों के अपने है। इसमें संपादक / मुद्रक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में संपादक / मुद्रक जिम्मेदार नहीं होगा। इस पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद के लिए सुनवाई क्षेत्र रायपुर न्यायालय होगा।

अनुक्रमणिका

जुलाई 2022

इस अंक में

कम हो रही अस्पतालों की भाग-दौड़

बेहतर स्वास्थ्य और बीमारी में उचित इलाज का सपना सभी का होता है। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल की भी मंशा थी, कि राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं में इजाफा के साथ हर बीमारियों का इलाज समय पर हो।

6

प्रयास के बच्चों का शानदार प्रदर्शन 9

पीईटी में प्रयास आवासीय विद्यालय के बच्चों ने शानदार प्रदर्शन किया है।

अधिकारी वितरण व्यवस्था पर रखे निगरानी 22

कृषि मंत्री ने खाद-बीज के भण्डारण एवं उठाव की स्थिति की समीक्षा की।

आइए जानते है 3 सालों का रिपोर्ट कार्ड... 24

खाद्य मंत्री अमरजीत भगत के कैबिनेट मंत्री के रूप में सेवा के 3 वर्ष पूर्ण हुए।

छत्तीसगढ़ में पहली बार प्रोफेशनल बॉक्सिंग इवेंट 26

बलवीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम में अगस्त माह में होगा आयोजन

अब कभी नहीं थमेगी दिल की धड़कन 28

एनएचएस के डॉक्टरों ने 'ऑर्गन केयर सिस्टम' मशीन बनाई है।

राखी समेत कई ने चुना एग फ्रीज का रास्ता 30

एग फ्रीजिंग से गर्भधारण करने वाले अंडों को सुरक्षित रखा जा सकता है।

भाजपा के लिए शिंदे सरकार गेमचेंजर?

उमेश के बंसी
(प्रबंध संपादक)

सिर्फ ढाई साल और...फिर से चुनाव और फिर से सरकार गठन की तैयारी! जी हां, भाजपा और शिवसेना के गठबंधन को वर्ष 2019 के चुनाव में सरकार बनाने का मौका मिला था, लेकिन शिवसेना ने जीत दर्ज करने के बाद भाजपा के पाले में गेंद फेंकने नहीं दिया और दूसरी अन्य पार्टियों के साथ मिलकर सरकार बना ली। वो भी क्या था और आज का वक्त है। सिर्फ ढाई साल में ही उद्धव ठाकरे की सरकार की कुर्सी ढोल गई। इन सबकी वजह एक ही है कि अंदरखाने की खिचड़ी। सरकार में होने के बावजूद अंदरखाने की चहलकदमी ने उद्धव सरकार को बैकफुट में लाकर खड़ा कर दिया और अतंतः ठाकरे जी को इस्तीफे देने पड़ गए। चलिए ये सबकुछ तो ठीक था, लेकिन बगावत हुए शिंदे के लिए सीएम की कुर्सी क्या आसान थी, लेकिन भाजपा ने दरियादिली दिखाते हुए शिंदे को उस कुर्सी के लायक समझते हुए समर्थन देते हुए बैठा दिया। अब सवाल इस बात का है कि आखिरकार सरकार में किसकी चलेगी। देवेंद्र फडणवीस को डेप्यूटी सीएम की कुर्सी दी गई है, बताते है कि इस कुर्सी के पावर सिर्फ मंत्री जीतने होते है। पूरे पांच साल सीएम रहने के बाद अब फडणवीस को सीएम से नीचे वाली कुर्सी मिली है। यानी एक समय ऐसा था कि शिंदे को डेप्यूटी सीएम बनाए जाने का ऐलान होना था, लेकिन महराष्ट्र के संग्राम में जीत एकनाथ शिंदे की हुई। पखवाड़ेभर ऐसा माहौल रहा कि भाजपा फिर से महाराष्ट्र में राज करेगी, लेकिन राज है जरूर। पर पूरा राज नहीं कर पा रही है। क्या है कि पूरे पांच साल सरकार में रहो तो ही ठीक रहता है और काम भी जनता को समझ में आती है। ढाई साल में कुछ भी समझ नहीं आता है। ऐसे में भाजपा ने नया पैंतरा अपनाया है और भाजपा यही चहती है कि अगले पांच साल में वे सरकार में बड़ी कुर्सी आजमाते हुए पूरे पांच साल सफर तय करें और जनता की सेवा में अच्छे काम करें। हालांकि अब यह देखना होगा कि आने वाले समय में ढाई साल वाली सरकार किस तरह का काम करेगी और काम के बदौलत कितना बेहतर वातावरण तैयार कर पाएगी। क्योंकि यह गठबंधन भाजपा के लिए कितना कारगर होगा और गेमचेंजर होगा देखने वाली बात रहेगी।

कृषि के क्षेत्र में स्टार्टअप के मामले में छत्तीसगढ़ अव्वल

छत्तीसगढ़ में पिछले चार वर्षों में युवाओं का रुझान खेतीबाड़ी के स्टार्टअप की ओर बढ़ा है. दरअसल, केंद्र सरकार की राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत मिल रहे अनुदान से युवाओं का हौसला निरंतर बढ़ रहा है. प्रदेश से वर्ष 2019 में 24, 2020 में 19 व 2021 में 20 युवाओं का अभिनव और उद्भव दोनों योजनाओं में चयन हुआ है.

हम कृषि के क्षेत्र के बड़े स्टार्टअप की बात करें तो अमलीडीह रायपुर निवासी उमेश बंशी की आर्गा लाइफ कंपनी लोगों तक प्रमाणित जैविक उत्पाद पहुंचा रही है. कंपनी के अब रायपुर में दो और एक मुंबई में भी है. वह देश के 200 प्रगतिशील किसानों से जुड़े हैं व उनके उत्पादों के विपण्न के साथ ही उन्हें जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित करते हैं. उमेश ने ब्रांड मैनेजमेंट में स्पेशलाइजेशन देश की जानीमानी मुद्रा इंस्टीट्यूट अहमदाबाद से किया है. वे उद्भव कार्यक्रम में दो महीने के प्रशिक्षण पर हैं. उन्हें 25 लाख रुपये मिलेंगे. वे बताते है कि आर्गा लाइफ छत्तीसगढ़ का पहला आर्गेनिक एफएमसीजी ब्रांड है. जो अब न केवल रायपुर बल्कि मुंबई में भी शुरू हो चुका है. हालांकि उपभोक्ता एमेजॉन और फ्लिपकार्ट के माध्यम से भी कंपनी के प्रोडक्ट खरीद सकते है. उमेश कहते है कि इन दिनों लोग आर्गेनिक प्रोडक्ट को फैशन के रूप में इस्तेमाल करते है. लेकिन इसके असली फायदें को जानने के बाद लोग इसे रोजाना डे टू डे लाईफ से भी जुड़ जाएंगे.

वे सरकार की इन योजनाओं की भी तारिफ करते नहीं थकते जिसमें इन योजनाओं में युवाओं की सोच को प्रोत्साहित किया जाता है. बता दें कि आर्गा लाइफ का एक स्टोर राम मंदिर वीआईपी रोड के सामने और एक शंकर नगर में कान्हा हॉस्पिटल के पास मौजूद है. इसके अलावा कंपनी मैन्यूफैक्चरिंग में भी है. कंपनी यूनिक प्रोडक्ट है जो आयुर्वेद से प्रेरित है उसमें गुड पान, गुड पाचक समेत अन्य प्रोडक्ट मौजूद है. वहीं कंपनी का विजन है, आने वाले 5 सालों में संपूर्ण भारत में अपने फ्रैंचाइजी स्टोर खोले, इसके लिए कंपनी ने अपना एफोर्टेबल यूनिक फ्रेंचायजी मॉडल तैयार किया है, जो काफी पसंद किया जा रहा है. बता दें कि कंपनी के फाउंडर उमेश बंसी जिनको ब्रांडिंग और मार्केटिंग में 20 वर्षों का अनुभव है.

दो भाइयों ने मिलकर खड़ी कर दी कंपनी

सिमगा के दो भाइयों अमृत और आनंद नाहर के जोरको स्टार्टअप ने प्रदेश के किसानों के खास उत्पाद काला चावल, अर्जुन की छाल, महुआ के लड्डू आदि को गुजरात के बाजार तक पहुंचाया. इस साल कंपनी का टर्नओवर 1.2 करोड़ रुपये है. उन्हें उद्भव योजना के तहत 25 लाख रुपये का अनुदान मिला है. पर्यावरण इंजीनियर अमृत नाहर ने 2020 में कोरोना काल में अपने भाई के साथ कंपनी शुरू की थी. पहले एनर्जी बूस्टर उत्पाद लाए। अब जैविक उत्पाद के क्षेत्र में काम कर रहे हैं.

मुनगा की पत्तियों से शुरू किया स्टार्टअप

रायपुर के देवपुरी निवासी मैकेनिकल इंजीनियर सुधांशु नाफडे (30) ने मुनगा (सहजन) की पत्तियों से नया स्टार्टअप शुरू किया. उन्होंने मुनगे की पत्तियों से परंपरागत तरीके से मुनगा पाउडर, मुनगा के बीज का तेल, टेबलेट, एनर्जी बार, कैप्सूल आदि बनाया जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ कुपोषण दूर करने में उपयोगी हैं. उनसे 250 किसान जुड़े हैं. उद्भव योजना में उनका 25 लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत हुआ है. अब सुधांशु मशीन से उत्पाद बनाएंगे.

बेहतर स्वास्थ्य और बीमारी में उचित इलाज का सपना सभी का होता है। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल की भी मंशा थी, कि राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं में इजाफा के साथ हर छोटी-बड़ी बीमारियों का इलाज समय पर और सहजता से हो। इलाज के लिए किसी भी व्यक्ति अथवा परिवार को आर्थिक तंगी से जूझना ना पड़े। उन्होंने अपनी इसी दूरदर्शी सोच और सूझबूझ से स्वास्थ्य सुविधाओं की दिशा में रणनीति बनाकर, झुग्गी इलाकों में रहने वाले गरीब और जरूरतमंद सहित आम नागरिकों को बीमार पड़ने पर अस्पताल की भाग-दौड़ की बजाय, घर के आसपास इलाज मुहैय्या कराने मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना शुरू की। डेढ़ साल पहले लागू हुई यह स्वास्थ्य योजना ना केवल लोगों की आकांक्षाओं पर खरा उतर रही है, बल्कि हर जरूरतमंद का समय पर उपचार कर उनका विश्वास भी जीत रही है। स्लम इलाकों में मोबाइल मेडिकल यूनिट से 921 कैम्प के जरिए अब तक 80 हजार से अधिक लोगों ने अपना उपचार कराया है।

मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना-गरीबों से रही नाता जोड़

कम हो रही अस्पतालों की भाग-दौड़

गौरतलब है कि धमतरी में नवंबर 2020 से मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना का लाभ लगातार जरूरतमंद और गरीब परिवारों को मिल रहा है। इसने गरीब और जरूरतमंद परिवारों को ना केवल बीमार होने पर इलाज का काम किया है, बल्कि स्वच्छता बनाए रखने और बीमार होने पर तुरंत इलाज कराने के लिए भी लोंगों को प्रेरित किया है। अक्सर गरीब और बीमार व्यक्ति पैसा नहीं होने अथवा अस्पताल से दूरी सोचकर इलाज कराने से कतराता है ऐसे में प्रदेश सरकार की महती योजना मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना लोगों के लिए किसी वरदान से कम नहीं। स्लम इलाके के लोगों को अपने गली-मुहल्ले में ही डॉक्टर की टीम के साथ मोबाइल मेडिकल यूनिट के रूप में अस्पताल मिल गया है, जहां चिकित्सक सहित लैब टेस्ट की सुविधा, दवाइयां और उपचार सब कुछ निःशुल्क मिल रहा है। धमतरी शहर में मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना के तहत दो मोबाइल मेडिकल यूनिट से 24 जून 2022 तक 80 हजार 157 मरीजों का उपचार किया गया है। कुल 65 हजार 737 मरीजों को दवाई वितरण, 20 हजार 296 हितग्राहियों का लैब टेस्ट किया गया। यह योजना शहरी स्लम इलाके के लोगों को उनके घर के नजदीक निशुल्क स्वास्थ्य सुविधा देने में सफल साबित हो रही है।

आठ हजार लोगों को जरूरी निःशुल्क दवाइयां

मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना अंतर्गत अब तक 135 से ज्यादा कैम्पों में 9000 मरीज स्वास्थ्य परीक्षण कराने आएं। आठ हजार लोगों को जरूरी निःशुल्क दवाइयां दी गई। वहीं 1500 व्यक्तियों का विभिन्न बीमारियों का लैब टेस्ट किया गया। शहरी स्लम बस्तियों में रहने वाले लोगों को और बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मोबाईल मेडिकल यूनिट की सुविधा प्रारंभ कर दूरस्थ अंचल के जरूरतमंद लोगों तक स्वास्थ्य परीक्षण के लिए बेहतर साधन उपलब्ध कराया गया है। इस मोबाइल मेडिकल यूनिटों में एमबीबीएस डॉक्टर जिले की स्लम बस्तियों में कैंप लगाकर मरीजों को स्वास्थ्य सुविधाएं दे रहें है। एमबीबीएस डॉक्टर के साथ कैम्प में मुफ्त दवा वितरण के लिए फार्मासिस्ट, मुफ्त लैब टेस्ट करने के लिए लैब मरीजों तक मुफ्त जांच, उपचार और दवा की सुविधा पहुंचाई जा रही है। बता दें कि 1 नवंबर 2020 को मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना की शुरूआत मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने की थी।

मेडिकल यूनिट के माध्यम से इलाज

वर्तमान में दो मोबाईल मेडिकल यूनिट जिले में संचालित है। जिसमें एक महासमुंद नगरीय क्षेत्र और दूसरी मोबाईल मेडिकल यूनिट सरायपाली में है। इसके जरिए लोगों का खून जांच, थायराइड, मलेरिया, टाइफाइड, ईसीजी, ब्लड प्रेशर, पल्स, ऑक्सीमीटर के साथ अन्य जांच कुशल लैब टेक्नीशियन एवं अत्याधुनिक सुविधा वाली मशीनों से की जाएगी। मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना का शिविर सभी वार्डों में रूट के अनुसार संचालित किया जा रहा है। मोबाईल मेडिकल यूनिट अंतर्गत लगने वाले कैम्प और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने वालों की संख्या में इजाफा हो रहा है। मरीज मोबाईल मेडिकल यूनिट के माध्यम से इलाज करा रहे हैं। मोबाइल मेडिकल यूनिटों के जरिए अब तक 135 कैम्प लगाए गए हैं। महासमुंद में 60 और सरायपाली नगरीय क्षेत्र में 26, बागबाहरा में 19, पिथौरा में 12, बसना में 11 और

तुमगॉव नगरीय क्षेत्र में 7 मोबाईल मेडिकल यूनिट कैम्प लगे हैं।

मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना के माध्यम से स्लम इलाकों में रहने वाले नागरिकों के इलाज और उनके स्वास्थ्य परीक्षण के लिए मोबाइल मेडिकल यूनिट सुविधा प्रारम्भ की गई है। अब स्लम इलाकों में रहने वाले क्षेत्र के नागरिकों को इलाज और मेडिकल जांच के लिए कहीं भी भटकना नहीं पड़ रहा। यह मोबाइल मेडिकल यूनिट स्लम इलाकों में जा रही है। जिले में अभी फिलहाल दो मोबाईल मेडिकल यूनिट है। एक महासमुंद दूसरी सरायपाली में है। मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजनांतर्गत महासमुंद को शहरी क्षेत्रों में एक मोबाईल मेडिकल यूनिट (एमएमयू) सुविधा नगरपालिका को मिल गई है और एक यूनिट सरायपाली में है। नगरपालिका अधिकारी आशीष तिवारी ने बताया कि स्लम बस्तियों का रूट चार्ट तैयार कर कैम्प लगाए जा रहें हैं।

मेडिकल स्टोर को दवाइयों का ऑर्डर

धन्वंतरी जेनेरिक मेडिकल स्टोर को दवाइयों का ऑर्डर भी दिया जा रहा है। अब जिले के शहरी क्षेत्रों की झुग्गी बस्तियों में निवासरत लोगों की नियमित जांच, उपचार, दवा का लाभ और बेहतर एवं सरल तरीके से सुविधा मिल रही है। जिससे स्लम इलाकों में रहने वाले लोग ना सिर्फ इन मोबाईल मेडिकल यूनिट पर डॉक्टरों से अपना इलाज करा सकेंगे, साथ ही यहां से दवाइयां और कई जरूरी टेस्ट भी मुफ्त किए जा रहे है। अब जिले में स्लम बस्तियों के मरीजों को मुफ्त जांच, उपचार और दवा की सुविधा और बेहतर तरीके से मिल रही है। आधुनिक उपकरण से सुसज्जित मोबाईल मेडिकल यूनिट स्वास्थ्य सेवाएं देगी। मोबाईल मेडिकल यूनिट में 14 प्रकार के विभिन्न लैब टेस्ट किए जाते हैं। कैंप लगाकर डॉक्टर, लोगों की जांच कर रहे है।

प्रयास के बच्चों का शानदार प्रदर्शन

> व्यावसायिक परीक्षा मंडल (व्यापम) द्वारा घोषित पीईटी परीक्षा के परिणाम में प्रयास आवासीय विद्यालय के बच्चों ने शानदार प्रदर्शन किया है। इस वर्ष पीईटी परीक्षा में शामिल हुए प्रयास के 317 बच्चों में से 210 बच्चों का अच्छा रैंक होने के कारण इनके शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश होने की संभावना है।

इस वर्ष के जारी परीक्षा परिणाम में सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि प्रयास बालक, रायपुर के छात्र हिमांशु साहू ने मेरिट सूची में 10वां स्थान हासिल कर विद्यालय के साथ-साथ आदिम जाति कल्याण विभाग को भी गौरवान्वित किया है।

उल्लेखनीय है कि हिमांशु साहू का परिवार बेहद ही सामान्य पृष्ठभूमि का है। इनके पिता श्री हेमंत कुमार साहू स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत हैं, तो वहीं माता अर्चना साहू एक निजी स्कूल में शिक्षिका हैं। हिमांशु अपनी सफलता का श्रेय विद्यालय के अच्छे शैक्षणिक माहौल के साथ-साथ अपने शिक्षकों को देते हैं, जिनके मार्गदर्शन में उन्होंने इतनी बड़ी सफलता हासिल की। साथ ही आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विभाग का भी हृदय से आभार व्यक्त किया है, जिसके द्वारा यह महत्वाकांक्षी योजना संचालित की जा रही है।

प्रयास बालक, रायपुर के छात्रों का शानदार प्रदर्शन

प्रयास बालक आवासीय विद्यालय, रायपुर के बच्चों ने पीईटी परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया है। इसके परीक्षा में शामिल सभी 57 छात्रों का चयन प्रदेश के शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेजों में होने की पूरी संभावना है। उसमें से भी 45 छात्रों का प्रवेश प्रदेश के टॉप तीन शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेजों में होने की संभावना है। इसके साथ ही प्रयास बालक, रायपुर के 12 छात्र टॉप 100 में स्थान बनाने में सफल हुए हैं। इनमें संजय आचला एवं सुरेन्द्र कुमार ध्रुव ने एसटी कैटेगरी में क्रमशः 5वां एवं 12वां रैंक तथा कौशल टांडिया ने एससी कैटेगरी में 15वां रैंक हासिल किया है। इसके अलावा प्रयास कन्या आवासीय विद्यालय, रायपुर की परीक्षा में शामिल 32 छात्राओं में से रैंक के आधार पर 25 का प्रवेश शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेजों में होने की संभावना है। इसी

प्रकार प्रयास बिलासपुर के 33 में से 25, प्रयास दुर्ग के 61 में से 19, प्रयास सरगुजा के 36 में से 32, प्रयास बस्तर के 26 में से 25, प्रयास कांकेर के सभी 13 छात्र, प्रयास कोरबा के 10 में से 01 एवं प्रयास जशपुर के 49 में से 13 छात्र सहित कुल 210 छात्रों का प्रवेश शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेजों में हो जाने की संभावना है।

उल्लेखनीय है कि प्रयास आवासीय विद्यालयों में कक्षा 9वीं में राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा के माध्यम से चयन होता है तथा इसमें कक्षा 9वीं से 12वीं तक उत्कृष्ट शिक्षा की व्यवस्था है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर की उत्कृष्ट शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश करने के लिए सक्षम बनाना है। इन विद्यालयों से अब तक 97 विद्यार्थी भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान (आईआईटी), 261 विद्यार्थी राष्ट्रीय प्रौद्योगिक संस्थान एवं 44 विद्यार्थियों ने राज्य के मेडिकल कॉलेजो में एमबीबीएस पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त कर विशेष उपलब्धि हासिल की है। इसके अलावा सीए, सीएस, सीएमए में 29 और क्लैट में 3 विद्यार्थी प्रवेश प्राप्त करने में सफल रहे हैं। साथ ही राज्य के विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेजों में अब तक 833 विद्यार्थी प्रवेश प्राप्त करने में सफल रहे हैं। वर्तमान में प्रदेश में 9 प्रयास आवासीय विद्यालय संचालित किए जा रहे है, इनमें रायपुर में 2, दुर्ग, बिलासपुर, अंबिकापुर, कोरबा, जशपुर, कांकेर तथा जगदलपुर में एक-एक विद्यालय संचालित हो रहे हैं।

मलेरिया मुक्ति की ओर अग्रसर

बस्तर संभाग में मलेरिया सकारात्मकता दर 4.60 प्रतिशत से घटकर 0.21 पर पहुंचा

अभियान के तहत 90 लाख मच्छरदानियों का निःशुल्क वितरण

मलेरिया नियंत्रण की दिशा में प्रदेश सरकार ने अभूतपूर्व कार्य करते हुए ह्यह्यमलेरिया मुक्त छत्तीसगढ़ह्लह्ल की दिशा में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। वर्ष भर पूर्व जहां प्रदेश का बस्तर संभाग मलेरिया संक्रमण का मुख्य केन्द्र होता था वहीं आज बस्तर के साथ-साथ समूचे छत्तीसगढ़ में मलेरिया संक्रमण की दर अब तक के सबसे न्यूनतम स्तर तक पहुंच चुकी है। इस अभियान के छठवे चरण के दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीमों अब तक 7 लाख 6 हजार घरों में पहुंचकर 33 लाख 96 हजार 998 लोगों की मलेरिया जांच कर चुकी है। इस दौरान पॉजिटिव पाए गए मरीजों का मौके पर ही इलाज शुरू किया गया।

बस्तर संभाग में मलेरिया सकारात्मकता दर 4.60 प्रतिशत से घटकर 0.21 पर पहुंचा

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, छ.ग. सह राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की संचालक डॉ. प्रियंका शुक्ला ने बताया कि प्रदेश में मलेरिया से सबसे ज्यादा प्रभावित बस्तर संभाग में मलेरिया मुक्त छत्तीसगढ़ अभियान के पहले पांच चरणों का व्यापक असर दिखा है। यदि मलेरिया मुक्त छ.ग. अभियान के जनवरी 2020 के प्रथम चरण और छठवे चरण को तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो बस्तर जिले में पहले चरण में मलेरिया सकारात्मकता दर 2.05 और छठवें चरण में 0.09 प्रतिशत इसी प्रकार बीजापुर में पहले चरण में 5.45 और छठवें चरण में 0.44 प्रतिशत, दतेवाड़ा में 4.69 से 0.41 प्रतिशत, कांकेर में 0.35 से 0.02, कोंडागांव में 1.30 से 0.05, सुकमा मे 5.80 से 0.17 और नारायणपुर में 6.64 प्रतिशत से घटकर 1.90 प्रतिशत तक की कमीं आ चुकी है। इस प्रकार पूरे बस्तर संभाग में प्रथम चरण में मलेरिया सकारात्मकता दर जहाँ 4.6 प्रतिशत दर्ज की गई थी वहीं छठवें चरण में यह घटकर मात्र 0.21 ही रह गई हैं। विदित हो कि मलेरिया मुक्त छ.ग. अभियान के प्रथम चरण में 64 हजार 646 मलेरिया केस दर्ज किये गए थे वहीं छठवे चरण में केवल 7 हजार 170 केस पाए गए हैं जिनका तुरंत इलाज किया जा रहा है। पूर्व में मलेरिया मुक्त बस्तर अभियान के नाम से संचालित इस अभियान के प्रभाव से वहां एपीआई (A»»f»»fuÔl PÔrÔsite l»»fcide»»fce) यानि प्रति एक हजार की आबादी में सालाना मिलने वाले मलेरिया के मरीजों की संख्या में बड़ी कमी आई है। अभियान के अंतर्गत मितानिनों एवं स्वास्थ्य कार्यकताओं द्वारा घने जंगलों और पहाड़ों से घिरे बस्तर के पहुंच विहीन, दुर्गम एवं दूरस्थ इलाकों में घर-घर पहुंचकर सभी लोगों की आरडी किट से मलेरिया की जांच की गई। पॉजिटिव पाए गए लोगों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध खाद्य पदार्थ खिलाकर तत्काल मलेरिया के इलाज के लिए दवाई का सेवन चालू किया गया। मितानिनों की निगरानी में उन्हें दवाईयों की पूरी खुराक खिलाई गई। अभियान के दौरान हर घर और हर व्यक्ति की जांच सुनिश्चित करने के लिए घरों में स्टीकर चस्पा कर जांच किए गए लोगों के पैर के अंगूठे में निशान लगाकर मार्किंग की जाती है।

बचाव के लिए ये जरूरी

छत्तीसगढ़ से मलेरिया को खत्म करने के लिए मलेरिया मुक्त छत्तीसगढ़ अभियान का छठवां चरण 17 मई से शुरू किया गया है। मलेरिया मुक्त बस्तर अभियान के असर को देखते हुए राज्य के 21 जिलों तक इसका विस्तार किया जा चुका है । जिसके तहत छत्तीसगढ़ के सुदूर वनांचलों के साथ समूचे छत्तीसगढ़ में मलेरिया से बचाव के लिए जागरूकता फैलाने संबंधी गतिविधियों की कार्ययोजना पर कार्य किया जा रहा है । जिसमें लोगों को मुख्य रूप से मच्छरदानी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करना, घरों के आसपास जमे पानी में, नालियों में डीडीटी/जले हुए तेल का छिड़काव करना, स्वच्छता रखने व घरों के आसपास मच्छर ना पनपने हेतू जरूरी उपाय बताए जा रहे हैं ।

अभियान के तहत 90 लाख मच्छरदानियों का निःशुल्क वितरण

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के महामारी नियंत्रक डॉ. सुभाष मिश्रा ने बताया कि बस्तर संभाग में वर्ष 2018 से वर्ष 2021 तक कुल 27 लाख 11 हजार 560 एवं अन्य मलेरिया संवेदनशील जिलों में 63 लाख 84 हजार 50 मच्छरदानियों का वितरण किया जा चुका है । वर्ष 2018 से अब तक सुकमा जिले में 1 लाख 47 हजार 331, बीजापुर 1 लाख 77 हजार 885, बस्तर 7 लाख 77 हजार 729 , दंतेवाड़ा 2 लाख 83 हजार 200 , नारायणपुर 86 हजार 609, कोंडागांव 4 लाख 75 हजार 696 , कांकेर 7 लाख 63 हजार110 मच्छरदानियों का वितरण किया जा चुका है। इस वित्तीय वर्ष 11 लाख 45 हजार 408 मच्छरदानियां बांटी जाएंगी जिससे कि लोगों को मच्छरों से सुरक्षा मिल सके।

तेन्दूपत्ता संग्रहण से समृद्धि

छत्तीसगढ़ में चालू वर्ष 2022 के दौरान 15 लाख 78 हजार मानक बोरा तेन्दूपत्ता का संग्रहण हुआ है, जो लक्ष्य का 94 प्रतिशत से अधिक है। यह संग्रहण गत वर्ष की तुलना में 21 प्रतिशत अधिक है। इनमें 12 लाख से अधिक तेन्दूपत्ता संग्राहकों को कुल 630 करोड़ रूपए की राशि का भुगतान होना है।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की मंशा के अनुरूप वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री मोहम्मद अकबर के मार्गदर्शन में राज्य में तेन्दूपत्ता संग्रहाकों को उनके भुगतान योग्य राशि का भुगतान तेजी से जारी है। राज्य में तेंदूपत्ता संग्रहण से आदिवासी-वनवासी संग्राहकों को रोजगार के साथ-साथ आय का भरपूर लाभ मिलने लगा है। गौरतलब है कि राज्य में वर्ष 2020 में 9 लाख 73 हजार मानक बोरा और वर्ष 2021 में 13 लाख 6 हजार मानक तेन्दूपत्ता का संग्रहण हुआ था, जो गत वर्ष की तुलना में वर्ष 2022 के दौरान तेन्दूपत्ता संग्रहण में लगभग 21 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

राज्य लघु वनोपज संघ से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जगदलपुर वनवृत्त के अंतर्गत वनमंडल बीजापुर में 52 हजार संग्राहकों द्वारा 32 करोड़ रूपए के 80 हजार 324 मानक बोरा, सुकमा में 44 हजार संग्राहकों द्वारा 40 करोड़ रूपए के एक लाख मानक बोरा, दंतेवाड़ा में 20 हजार 323 संग्राहकों द्वारा 8 करोड़ रूपए के 19 हजार 408 मानक बोरा तथा जगदलपुर में 43 हजार 178 संग्राहकों द्वारा 6.56 करोड़ रूपए के 16 हजार 396 मानक बोरा तेन्दूपत्ता का संग्रहण किया गया है।

इसी तरह कांकेर वनवृत्त के अंतर्गत वनमंडल दक्षिण कोण्डागांव में 33 हजार 843 संग्राहकों द्वारा 6.93 करोड़ रूपए के 17 हजार 332 मानक बोरा, केशकाल में 35 हजार संग्राहकों द्वारा 10.45 करोड़ रूपए के 26 हजार 118 मानक बोरा, नारायणपुर में 16 हजार 738 संग्राहकों द्वारा 9.61 करोड़ रूपए के 24 हजार मानक बोरा, पूर्व भानुप्रतापपुर में 32 हजार संग्राहकों द्वारा 38.48 करोड़ रूपए के 96 हजार 195 मानक बोरा, पश्चिम भानुप्रतापपुर में 33 हजार संग्राहकों द्वारा 31.62 करोड़ रूपए के 79 हजार 058 मानक बोरा तथा कांकेर में 33 हजार 928 संग्राहकों द्वारा 14.82 करोड़ रूपए के 37 हजार 047 मानक बोरा तेन्दूपत्ता का संग्रहण किया गया है।

दुर्ग वनवृत्त के अंतर्गत वनमंडल राजनांदगांव में 49 हजार 402 संग्राहकों द्वारा 29.25 करोड़ रूपए के 73 हजार 133 मानक बोरा, खैरागढ़ में 27 हजार 552 संग्राहकों द्वारा 14.82 करोड़ रूपए के 37 हजार 053 मानक बोरा, बालोद में 22 हजार 315 संग्राहकों द्वारा 9.09 करोड़ रूपए के 22 हजार 719 मानक बोरा तथा कवर्धा में 31 हजार संग्राहकों द्वारा 16.67 करोड़ रूपए के 41 हजार 666 मानक बोरा तेन्दूपत्ता का संग्रहण हुआ है। रायपुर वनवृत्त के अंतर्गत वनमंडल धमतरी में 27 हजार 568 संग्राहकों द्वारा 10.26 करोड़ रूपए के 25 हजार 666 मानक बोरा, गरियाबंद में 64 हजार 503 संग्राहकों द्वारा 33.10 करोड़ रूपए के 82 हजार 759 मानक बोरा, महासमुंद में 35 हजार 712 संग्राहकों द्वारा 33.42 करोड़ रूपए के 83 हजार 559 मानक बोरा तथा बलौदाबाजार में 20 हजार 792 संग्राहकों द्वारा 7.32 करोड़ रूपए के 22 हजार 320 मानक बोरा तेन्दूपत्ता का संग्रहण किया गया है।

बिलासपुर वनवृत्त के अंतर्गत अब तक वनमंडल बिलासपुर में 29 हजार 779 संग्राहकों द्वारा 12.06 करोड़ रूपए के 30 हजार 159 मानक बोरा, मरवाही में 30 हजार 458 संग्राहकों द्वारा 8.80 करोड़ रूपए के 22 हजार 700 मानक बोरा, जांजगीर-चांपा में 10 हजार 106 संग्राहकों द्वारा 3.23 करोड़ रूपए के 8 हजार 098 मानक बोरा, रायगढ़ में 39 हजार 422 संग्राहकों द्वारा 22.09 करोड़ रूपए के 55 हजार 230 मानक बोरा, धरमजयगढ़ में 46 हजार 063 संग्राहकों द्वारा 32.94 करोड़ रूपए के 82 हजार 351 मानक बोरा, कोरबा में 35 हजार 445 संग्राहकों द्वारा 21.03 करोड़ रूपए के 52 हजार 597 मानक बोरा तथा कटघोरा में 66 हजार संग्राहकों द्वारा 29.57 करोड़ रूपए के 73 हजार 929 मानक बोरा तेन्दूपत्ता का संग्रहण किया गया है।

इसी तरह सरगुजा वनवृत्त के अंतर्गत वनमंडल जशपुर में 36 हजार 187 संग्राहकों द्वारा 13.06 करोड़ रूपए के 32 हजार 664 मानक बोरा, मनेन्द्रगढ़ में 30 हजार 504 संग्राहकों द्वारा 17.96 करोड़ रूपए के 44 हजार 912 मानक बोरा, कोरिया में 25 हजार 305 संग्राहकों द्वारा 13.42 करोड़ रूपए के 33 हजार 553 मानक बोरा, सरगुजा में 40 हजार 771 संग्राहकों द्वारा 14.05 करोड़ रूपए के 35 हजार 145 मानक बोरा, बलरामपुर में 98 हजार 560 संग्राहकों द्वारा 56.71 करोड़ रूपए के एक लाख 41 हजार 767 तथा सूरजपुर में 54 हजार 355 संग्राहकों द्वारा 29.68 करोड़ रूपए के 74 हजार 212 मानक बोरा तेन्दूपत्ता का संग्रहण किया गया है।

छत्तीसगढ़ में 12 लाख संग्राहकों द्वारा 630 करोड़ रूपए का तेन्दूपत्ता संग्रहित

गत वर्ष की तुलना में 21 प्रतिशत से अधिक का तेन्दूपत्ता संग्रहण

वनमंत्री अकबर के मार्गदर्शन में संग्राहकों को सतत भुगतान

नॉर्थ ईस्ट में मोदी के 5 साल

इसके तहत एक अलग मंत्रालय, नॉर्थ ईस्ट के लिए फंड का नॉन-लैप्सबले पूल, नॉर्थ ईस्टर्न काउंसिल के सदस्य के रूप में सिक्किम को शामिल करना और उत्तर पूर्व क्षेत्र के विकास के लिए एक समर्पित विभाग शामिल था। दुर्भाग्यवश जब उन्होंने पद छोड़ा, तब क्षेत्र एक बार फिर ह्यटिरनी ऑफ डिस्टेंसह्न का शिकार हो गया। हालांकि यूपीए को इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण राजनीतिक समर्थन प्राप्त था, लेकिन परियोजनाओं को देरी, लागत में वृद्धि और पूर्ण नीतिगत लापरवाही का सामना करना पड़ा।

जब से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पदभार संभाला, उन्होंने इकोनॉमी, इंफ्रास्ट्रक्चर, रोजगार, उद्योग और संस्कृति सहित विकास के विभिन्न आयामों के क्षेत्र में एक बार फिर से पॉलिसी एटेंशन दिया। लोकतंत्र में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए जनप्रतिनिधियों (लॉ मेकर्स) के साथ बातचीत अपरिहार्य है। भारतीय जनता पार्टी ने प्रतिबद्ध नेतृत्व और कैडर के मजबूत नेटवर्क के साथ इस क्षेत्र में राजनीतिक सफलता हासिल की और केंद्र के साथ सहयोग करने और क्षेत्र को आगे ले जाने की दिशा में काम करने के लिए बहुत आवश्यक इच्छाशक्ति दिखाई। इस परिप्रेक्ष्य में अपने कार्यकाल के दौरान प्रधानमंत्री स्वयं इस क्षेत्र का 30 से अधिक बार दौरा कर चुके हैं। पार्टी ने नॉर्थ-ईस्ट में अपनी राजनीतिक उपस्थिति को मजबूत किया, जिसमें वामपंथ का गढ़ यानी त्रिपुरा भी शामिल है। एनडीए इस क्षेत्र के सात नॉर्थ ईस्ट राज्यों में से छह में सत्ता में है।

2014 के बाद से कुछ कदम

भारत का सबसे लंबा रेल और सड़क पुल, 4.94 किलोमीटर बोगीबिल ब्रिज का उद्घाटन 2018 में प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था। केंद्र की मोदी सरकार ने इस क्षेत्र में रेलवे कनेक्टिविटी की पहुंच दी। सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि इस क्षेत्र में ब्रॉड गेज के 900 किलोमीटर का ट्रैक बिछे। 88 किलोमीटर की धनसिरी-कोहिमा रेलवे ट्रैक, जो कोहिमा को राजधानी एक्सप्रेस, त्रिपुरा सुंदरी एक्सप्रेस के साथ राष्ट्रीय रेलवे नेटवर्क से जोड़ती है, इस क्षेत्र में लंबे समय से प्रतीक्षित रेलवे पहुंच प्रदान करती है। नरेन्द्र मोदी की ह्लट्रांसफॉर्मेशन बाय ट्रांसपोर्टेशनह्न पॉलिसी में राष्ट्रीय राजमार्गों के 3,800 किलोमीटर से अधिक और स्पेशल ऐक्सेलरैटिड रोड डेवलपमेंट के तहत 60,000 करोड़ रुपये के निवेश और भारतमाला परियोजना के तहत 30,000 करोड़ रुपये की परियोजनाएं शामिल थीं।

> नैगलेटेड स्टेट ऑफ द नेशन से लेकर ह्यलुक एंड एक्ट ईस्ट पॉलिसी तक पिछले पांच साल, नॉर्थ-ईस्ट इंडिया के लिए परिवर्तनकारी रहे हैं। पिछली बार जब नॉर्थ ईस्ट इंडिया को पॉलिसी मेकर्स और लॉ मेकर्स द्वारा तब एटेंशन मिला था, जब स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी इस क्षेत्र में एक रात बिताने वाले पहले प्रधानमंत्री बने थे। उनके कार्यकाल के दौरान कई कदम उठाए गए, जिनका उद्देश्य नॉर्थ-ईस्ट इंडिया को इंफ्रास्ट्रक्टर और टेक्नोलॉजी के माध्यम से जोड़ना था।

भारत के लिए पर्याप्त प्रवेश द्वार

पिछले पांच वर्षों में इलाके को हवाई मार्ग से जोड़ने के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं। एक एविएशन मैनपॉवर ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट, रूपसी हवाई अड्डे का विकास, दीमापुर में हवाई सुविधा का विस्तार, मोदी सरकार द्वारा इस क्षेत्र में कुछ परियोजनाएं हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस क्षेत्र को शेष भारत के लिए पर्याप्त प्रवेश द्वार मिले। 2016 में मैरी कॉम, भारत की सबसे बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक राज्यसभा की सदस्य बनीं। यह केवल मणिपुर के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए गर्व की बात थी। खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्रीय नेतृत्व की प्रतिबद्धता मणिपुर में फर्स्ट नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के रूप में परिलक्षित होती है।

4000 लाभार्थियों को वित्तीय सहायता की घोषणा

अरुणाचल प्रदेश में नॉर्थ ईस्ट रीजन टेक्सटाइल प्रमोशन स्कीम के तहत एक एकीकृत बड़े पैमाने पर ईरी फार्मिंग शुरू की गई। ईरी सिल्क किसानों और बुनकरों को कौशल प्रशिक्षण के साथ-साथ एनईआरटीपीएस के तहत 4000 लाभार्थियों को वित्तीय सहायता की घोषणा की गई है। भाजपा के केंद्र में होने के कारण क्षेत्रीय नीतियों को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत और सुदृढ़ किया गया। इसने क्षेत्र को राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में दृश्यता और मान्यता प्रदान की, जिसने अंततः इस क्षेत्र को अधिक सुरक्षित बना दिया और इसे शेष राष्ट्र के करीब लाया। फूड पार्क, कपड़ा उद्योग और सूचना प्रौद्योगिकी की बढ़ती संख्या के साथ, नॉर्थ ईस्ट में भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच व्यापार लिंक होने की संभावना है और आने वाले वर्षों में इसका फायदा होने वाला है। क्षेत्र के महत्व को दक्षिण एशियाई उप-क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग सड़क संपर्क कार्यक्रम के साथ बढ़ाया गया है, चीन की महत्वाकांक्षी वन बेल्ट वन रोड की पहल को देखते हुए यह कदम काफी महत्वपूर्ण होगा।

क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को एक उत्साह

सरकार ने पथप्रवर्तक नीति घोषणाओं में से एक में, बांस को पेड़ से घास के रूप में फिर से वगीर्कृत किया। नॉर्थ ईस्ट की इकोनॉमी के लिए बांस महत्वपूर्ण है और यह नीति क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को एक उत्साह प्रदान करेगी। रीमा दास की फिल्म विलेज रॉकस्टार्स को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। सम्मान और पुरस्कार इस क्षेत्र के उभरते प्रतिभाओं को प्रेरणा प्रदान करते हैं और पारंपरिक सोच को बदलते हैं जो यह बताती कि ह्यटिरनी ऑफ डिस्टेंसह्न के कारण नॉर्थ ईस्ट का भविष्य सीमित है।

सीएम आपके द्वार...

तीन साल में बदला छत्तीसगढ़

भेंट-मुलाकात के जरिए लोगों की समस्या हुई निराकृत

सरकार की योजनाओं की जमकर हो रही तारीफें

कई रोचक किस्से और समाधान भी तुरंत ढूंढ रहे

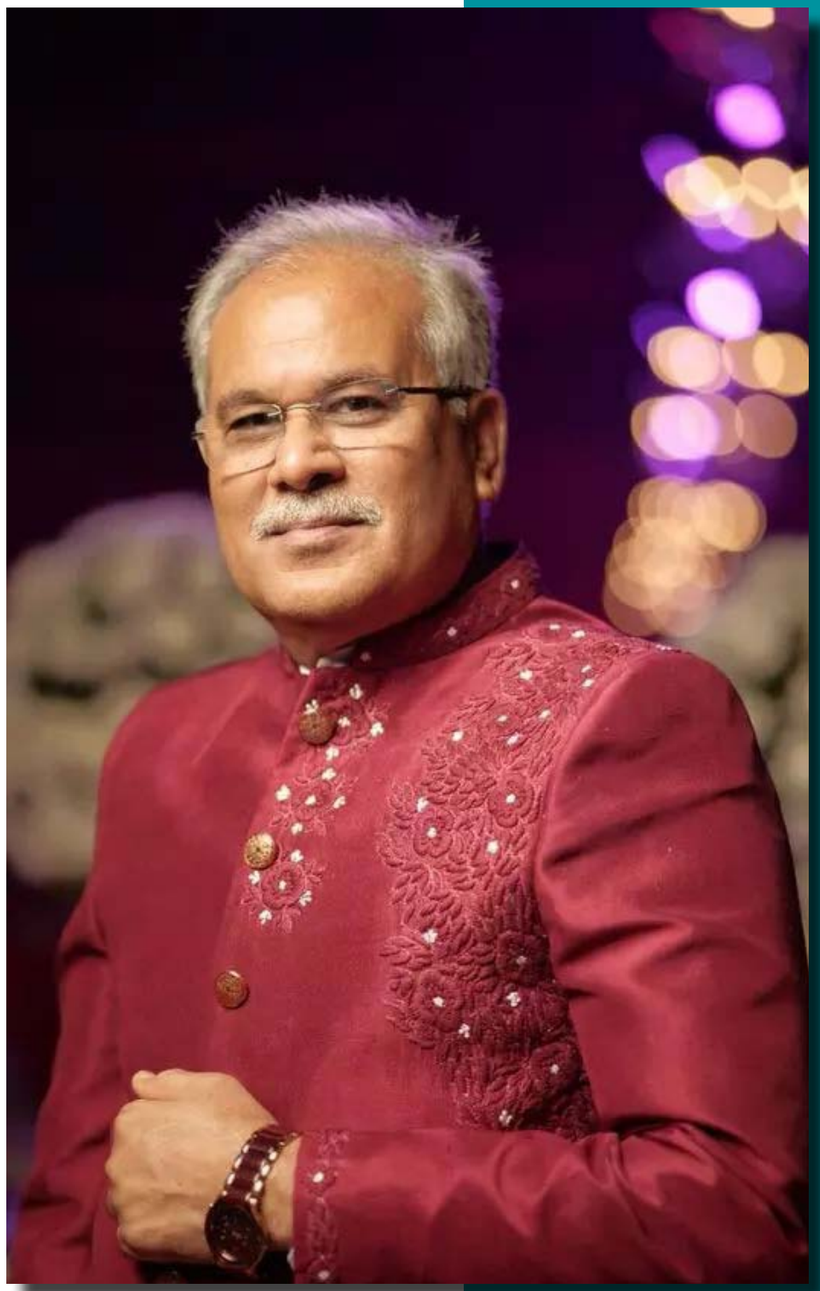

छत्तीसगढ़ में सीएम भूपेश बघेल भेंट-मुलाकात के जरिए हर समस्याओं का निराकरण करने में जुटे हुए है। उनके काम की तारीफें भी खूब हो रही है। प्रदेश के दो संभागों का सीएम ने दौरा करने के बाद अब मैदानी क्षेत्रों में पहुंचकर लोगों की समस्याएं सुनेंगे और लोगों से मुलाकात करेंगे। सीएम के भेंट-मुलाकात के दौरान रोचक तथ्य भी सामने आए, जिससे सुनकर आप भी आश्चर्य चकित हो जाएंगे।

गोधन ने बना दी जोड़ी

कुछ वर्ष पहले एक फिल्म आयी थी ह्लरब ने बना दी जोड़ीह्व, लेकिन छत्तीसगढ़ में अब लोग कह रहे हैं ह्लगोधन ने बना दी जोड़ीह्व। दरअसल कोरिया में एक युवक की शादी की रुकावट गोबर बेचने से ही दूर हुई है और गोबर बेचने से हो रही कमायी को देखकर ही उसकी शादी हो गई। किस्सा कोरिया जिला के मनेन्द्रगढ़ के रहने वाले श्याम जायसवाल का है। श्याम ने यह गोबर बेचने से हुई आमदनी के बाद शादी तय होने तक का रोचक किस्सा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के सामने भेंट-मुलाकात कार्यक्रम के दौरान बयां किया। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भेंट-मुलाकात की कड़ी में कोरिया जिला के पाराडोल पहुंचे थे। ग्रामीणों से चर्चा के दौरान जब बात गोधन न्याय योजना को लेकर छिड़ी तो मुख्यमंत्री से भेंट-मुलाकात करने पहुंचे श्याम कुमार जायसवाल ने गोधन न्याय योजना से उनकी जिंदगी में आए बदलाव को लेकर रोचक किस्सा साझा किया। श्याम कुमार ने बताया कि गोधन न्याय योजना की वजह से ही उनकी शादी की रुकावट दूर हुई और उन्हें जीवनसंगिनी मिली। दरअसल पशुपालन करने वाले श्याम कुमार की आमदनी पहले बहुत-कम थी। उन्होंने दूध डेयरी का व्यवसाय शुरू किया था, लेकिन दूध से जितनी आमदनी होती थी उससे बमुश्किल आजीविका चल पाती थी। पहले मवेशियों का गोबर व्यर्थ ही था। गोधन न्याय योजना लागू होने के बाद उन्होंने गोबर बेचना शुरू किया। श्री श्याम कुमार अब तक दो लाख पांच हजार किलोग्राम गोबर बेच चुके हैं, जिसके एवज में उन्हें चार लाख 10 हजार रुपये की आमदनी हुई है। श्याम कुमार ने कहा कि, यह योजना से उनके लिए अतिरिक्त आय का जरिया बना।

शुरू हुई नयी जिंदगी

श्याम कुमार ने बताया कि गोबर बेचने से हुई आमदनी से पहले उन्होंने कुछ और गौवंश खरीदे, जिससे ज्यादा गोबर प्राप्त हो सके और उन्हें बेचकर उनकी आमदनी में इजाफा हो। वहीं गोबर बेचने से हुई आमदनी से उन्होंने मवेशियों के लिए शेड बनवाया। लगातार हो रही आमदनी से श्याम कुमार आर्थिक रूप से इतने सक्षम हो गए कि उन्होंने अपने भाई के बच्चों का दाखिला अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में कराया। श्री श्याम कुमार ने कहा, गोधन न्याय योजना से मेरे जीवन में जो सकारात्मक बदलाव आया है, उसके लिए मैं मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

युवक की मेहनत देखकर परिजन प्रभावित

भेंट-मुलाकात कार्यक्रम में पति श्याम कुमार से साथ पहुंची उनकी अर्धांगिनी अंजू ने बताया कि पेशे से वे नर्सिंग स्टॉफ हैं। उनके विवाह को लेकर चर्चा चल रही थी, इस बीच परिजनों को श्याम कुमार से बारे में जानकारी मिली कि वे गोबर बेचकर अच्छी आमदनी कमा रहे हैं, साथ ही अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए भी मेहनत कर रहे हैं। इससे प्रभावित होकर अंजू के परिजन बेटी की ब्याह गोबर बेचने वाले श्री श्याम कुमार से कराने के लिए राजी हो गए। इनका विवाह बीते 19 जून को संपन्न हुआ।

लोगों की जेब में सीधे पैसा डालने का काम किया

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के भेंट-मुलाकात का कारवां बैकुंठपुर विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पटना पहुंचा। मुख्यमंत्री का वहां लोगों ने ध्वज और सूत की माला के साथ आत्मीय स्वागत किया। आंगनबाड़ी केंद्र करजी के नन्हें-मुन्ने बच्चों और ग्रामीणों ने गुलदस्ता भेंटकर उनका स्वागत किया। नौनिहालों ने ह्यहम बच्चो से करते प्यार हमारे कका शानदारह्न गीत गाकर सुनाया। मुख्यमंत्री ने नन्ही माही ध्रुव से हाथ मिलाया और दुलार किया। पटना में भेंट-मुलाकात के दौरान ग्राम सोरगा के रामलखन यादव ने मुख्यमंत्री को बताया कि हाट-बाजार क्लिनिक से घर के पास ही निःशुल्क इलाज और दवाईयां मिल रही हैं। इससे अस्पताल तक आने-जाने और डॉक्टर की फीस व दवाइयों पर होने वाला खर्च बच रहा है। उन्होंने इस योजना के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को धन्यवाद दिया। भूमिहीन श्रमिक शांति ने बताया कि उसे राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना का लाभ मिल रहा है। योजना के तहत मिली राशि से उन्होंने सिलाई मशीन खरीदी है। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने उसे बधाई देते हुए कहा कि महिलाएं स्वावलंबी हो रही हैं यह अच्छी बात है। मुख्यमंत्री से संवाद के दौरान स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल की छात्रा तेजल सिंह ने मुख्यमंत्री के सवालों का अंग्रेजी में जवाब दिया। तेजल ने बताया कि वह डॉक्टर बनना चाहती है। आत्मानंद स्कूल में उन्हें निःशुल्क अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाई के साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए अच्छा माहौल मिल रहा है।

सवाल और छात्रा के अंग्रेजी में जवाब

बैकुण्ठपुर विधानसभा के पोंड़ी में आयोजित भेंट मुलाकात कार्यक्रम में मुख्यमंत्री स्कूली छात्रों से संवाद कर रहे थे. स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल महलपारा बैकुण्ठपुर की छात्रा सताक्षी वर्मा से मुख्यमंत्री ने पूछा कि क्या तुम्हें छत्तीसगढ़ी आती है? छात्रा ने हां कहा तो मुख्यमंत्री ने कहा कि वो छत्तीसगढ़ी में पूछेंगे तो अंग्रेजी में जवाब देना. सताक्षी ने मुख्यमंत्री के हर छत्तीसगढ़ी सवाल का अंग्रेजी में जवाब दिया. सताक्षी के विश्वास और ज्ञान को देखकर मुख्यमंत्री ने उसकी तारीफ की . मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वामी आत्मानंद स्कूल खोलने के पीछे सरकार का उद्देश्य यही है कि छत्तीसगढ़ का हर बच्चा ऐसे ही बेहतर शिक्षा ग्रहण करे और फर्राटेदार अंग्रेजी बोले. मुख्यमंत्री ने सताक्षी से पूछा कि क्या यहां भी स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल खोलने से फायदा होगा. सताक्षी के हां में जवाब देने के बाद मुख्यमंत्री ने पोंड़ी में भी स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने की घोषणा कर दी.

इस किसान को छत्तीसगढ़ सरकार ने दी खुशियां ही खुशियां

कोरिया जिले के बुंदेली के किसान चरकू राम अब खुशहाल और तनावमुक्त जीवन जीते हैं। छत्तीसगढ़ सरकार ने जैसे उनकी सारी चिंताएं हर ली है। पिछले तीन सालों से वे अपनी उपज का अच्छा दाम पा रहे हैं। सरकार अच्छी कीमत पर उनका धान खरीद रही है। साथ ही राजीव गांधी किसान न्याय योजना से चार किस्तों में अतिरिक्त राशि भी मिल रही है। सरकार के कर्जमाफी के फैसले ने उनकी बड़ी चिंता दूर की थी। उनका एक लाख रूपए का कर्ज माफ हुआ था। भेंट-मुलाकात के लिए मनेन्द्रगढ़ विधानसभा के पाराडोल पहुंचे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को राजीव गांधी किसान न्याय योजना और कर्जमाफी के लिए धन्यवाद देते हुए चरकू राम ने बताया कि पिछले साल उन्होंने 156 क्विंटल धान बेचा था। सरकार द्वारा समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी से उसे तीन लाख रूपए मिले थे। बाद में राजीव गांधी किसान न्याय योजना से चार किस्तों में 93 हजार रुपए और मिले। अपनी खेती-बाड़ी को और आगे बढ़ाने उन्होंने इन पैसों से ट्रैक्टर खरीदा। पहले किराए के ट्रैक्टर के भरोसे अपनी 11 एकड़ जमीन में खेती करने वाले चरकू राम अब अपने खुद के ट्रैक्टर से खेती कर रहे हैं। अपने बेटे के साथ उन्होंने भी ट्रैक्टर चलाना सीख लिया है।

सड़क परिवहन उद्योग की अनकही कहानी

कृपाशंकर वर्मा अध्यक्ष
भारतीय राष्ट्रीय परिवहन कर्मचारी फेडरेशन

भारत का परिवहन उद्योग हमारी अर्थ व्यवस्था एवं समाज रचना का आवश्यक अंग है। भौगोलिक दृष्टि से भारत एक विशाल देश है। इसका क्षेत्रफल 3.26 मिलियन वर्ग किलोमीटर है। इसकी जनसंख्या 130 करोड़ से ऊपर पहुंच रही है। सड़कों की लम्बाई 3314 मिलियन किलोमीटर है। सारे देश में छोटी-बड़ी सड़कों का जाल फैला हुआ है, जिसमें राष्ट्रीय राजमार्ग, जिले की छोटी एवं बड़ी सड़के मिलाकर ग्रामीण क्षेत्र की सड़के भी सम्मिलित है। इस देश की भौगोलिक स्थिति में बर्फीले पहाड़, मरूस्थलों की बंजर जमीन, नदियों के किनारे, उंचे-नीचे पठार, जंगल, खेत सभी का समावेश है। इसमें सड़क परिवहन की विशेष भूमिका है। अधिकांश क्षेत्र में रेलमार्ग नहीं है।

सड़क परिवहन देशवासियों को एक दूसरे से जोड़ने का कार्य करता है। रेल मार्गों की ग्रामीण क्षेत्र में कमी के कारण परिवहन के अलावा माल परिवहन भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। माल परिवहन जीवन उपयोगी वस्तुओं तथा अन्य महत्वपूर्ण सामान को देश के कोने-कोने से लाने ले जाने का काम करता है। माल परिवहन की महत्वपूर्ण भूमिका इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि बहुत से क्षेत्र हवाई मार्ग तथा जल मार्गों एवं रेल परिवहन की पहुंच के बाहर है। सरकार की नीति के कारण सार्वजनिक परिवहन उद्योग खतरे में इस उद्योग में कार्यरत कर्मचारियों में सार्वजनिक परिवहन उद्योग, असंगठित परिवहन के साथ टेम्पो, आटो रिक्शा, गुड्स ट्रांसपोर्ट में माल उतारने तथा चढ़ाने वाले हम्माल भी सम्मिलित हैं। औसतन समूचे भारत वर्ष में कोई 50 लाख से भी अधिक बसे संचालित की जाती है। इसमें लगभग पांच लाख 10 हजार बसें सार्वजनिक परिवहन उद्योग की है। कुछ राज्यों में सार्वजनिक उद्योग बंद हो गये हैं एवं कुछ उद्योग बन्द होने की कगार पर हैं। कुछ सार्वजनिक परिवहन संस्थान अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इसके बावजूद भी सार्वजनिक परिवहन उद्योग देश का सबसे बड़ा संगठित उद्योग है। सार्वजनिक परिवहन में लगभग 7 लाख से अधिक और विभिन्न क्षेत्रों को मिलाकर 10 लाख लोग कार्य करते हैं। इस उद्योग में राज्य सरकारों की लगभग 10 अरब की पूंजी का समावेश है।

निराकरण के लिए कोई नीति भी नहीं

कर्मचारियों की समस्या के निराकरण के लिए कोई नीति निर्धारित नहीं है। निजी क्षेत्र की बस, ट्रक तथा अन्य वाहनों की संख्या, कर्मचारियों की संख्या, पूंजी की लागत के आंकड़े उपलब्ध नहीं है। सरकार के पास भी यह जानकारी नहीं है। सरकार के पास इस क्षेत्र की समस्याओं के निराकरण के लिए कोई नीति भी नहीं है। वाहनों की संख्या में निरंतर वृद्धि बहुत पहले सेन्ट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ रोड ट्रांसपोर्ट पूना की एक पत्रिका में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में 30 मिलियन वाहन है। 2-5 मिलियन वाहन प्रतिवर्ष बढ़ जाते हैं। निजी क्षेत्र का एक बहुत बड़ा मार्ग गुड्स ट्रांसपोर्ट (माल परिवहन) लगभग असंगठित है। निजी क्षेत्र के श्रमिकों को कानून में निर्धारित मजदूरी से भी कम मजदूरी मिलती है। यदि संगठित क्षेत्र से तुलना की जावे तो सेवा शर्ते भी अत्यधिक अस्त व्यस्त तथा चौका देने वाली है। समूची स्थिति अत्यधिक कष्टकारक है। कर्मचारी आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहे हैं। लोगों को अल्पकालीन करार पर नियुक्त किया जाता है तथा तदर्थ आधार पर वेतन दिया जाता है। उन्हें नियुक्ति पत्र नहीं दिया जाता है।

श्रमिकों के शोषण का मार्ग प्रशस्त

अभी हाल ही में भारत सरकार ने श्रम संघों के सभी सुझाओं को नजर अंदाज करते हुए एवं श्रम संघों के अनुशासित आन्दोलनों के बावजूद भी मोटर व्हीकल एक्ट 1988 तथा मोटर ट्रांसपोर्ट वर्कर्स एक्ट 1961 को संशोधित कर सड़क परिवहन कर्मचारी और छोटे बस आपरेटरों को पूंजीपतियों का गुलाम बना दिया है। उल्लेखनीय है कि यथा संशोधित मोटरयान (संशोधन) अधिनियम, 2019 बस ट्रक एवं सड़क पर संचालित वाहनों को नियमित करता है तथा संलग्न कर्मचारियों को अनुशासित करता है, वही मोटर ट्रांसपोर्ट वर्कर्स एक्ट 1961 में सड़क परिवहन कर्मचारियों की सेवा शर्तों का अलग अलग उल्लेख है। सरकार ने मोटर ट्रांसपोर्ट वर्कर्स एक्ट 1961 को 16 प्रचलित कानूनों के साथ संलग्न कर अब एक ह्लेबर कोड ऑन ऑकुपेशनल सेफ्टी हेल्थ एण्ड वर्किंग कन्डीशनह्व के नाम से नया कानून बना दिया। इस प्रकार सरकार ने काफी सोच समझ के पूंजीवादी नीति का परिचय देते हुए सड़क परिवहन उद्योग में अपनी जान की बाजी लगाने वाले 24 घन्टे कार्य करने वाले श्रमिकों के शोषण का मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

बस यातायात को बढ़ावा देना प्रारंभ

नई आर्थिक नीति से सार्वजनिक परिवहन उद्योग को भारी झटका। सरकार ने इस उद्योग को पूंजीगत सहायता देना बन्द कर दिया है। बजट में इस उद्योग को कोई सहायता नहीं दी जा रही है। सरकार ने निजीकरण तथा अनियमित बस यातायात को बढ़ावा देना प्रारंभ कर दिया है। इसमें उद्योग के संचालन में रूकावट आ रही है। इसका विकास रूक गया है एवं उद्योग का स्वरूप संकुचित हो रहा है। वास्तव में सार्वजनिक परिवहन उद्योग का अतीत गौरवशाली था किन्तु वर्तमान पीड़ा दायक एवं भविष्य अनिश्चित है।

क्षेत्रीय स्तर पर समझौते

सार्वजनिक परिवहन उद्योग के कर्मचारियों के वेतन तथा सेवा शर्तों में विभिन्न राज्यों में भिन्नता है और कहीं कहीं कुछ राज्यों में अलग अलग हालात हैं। सामूहिक सौदागिरी के द्वारा राज्यवार अथवा क्षेत्रीय स्तर पर समझौते होते हैं। लगभग 60 वर्ष पहले परिवहन उद्योग के कर्मचारियों का वेतन पुर्नरीक्षित करने के लिए भारत सरकार ने एक वेजबोर्ड गठन किया थ इसके पश्चात कोई ध्यान नहीं दिया गया।

गोबर से बनने लगा प्राकृतिक पेंट और पुट्टी

राज्य के कई गौठानों में लग रहीं हैं गोबर से पेंट बनाने की मशीनें

गोबर से प्रति वर्ष 37.50 लाख लीटर पेंट बनाने का लक्ष्य

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की गांवों को स्वावलंबी और उत्पादक केन्द्र के रूप में विकसित करने की मंशा तेजी से मूर्तरूप लेने लगी है। सुराजी गांव योजना के तहत गांवों में स्थापित गौठान अब ग्रामीणों के लिए रोजगार एवं आर्थिक आय का केन्द्र बनते जा रहे हैं। गौठानों में अब तक संचालित विविध प्रकार की आयमूलक गतिविधियों में एक और नया आयाम जुड़ गया है। गौठान से जुड़ी समूह की महिलाएं अब गोबर से प्राकृतिक पेंट और पुट्टी बनाने लगी हैं। इसकी शुरूआत राजधानी रायपुर के समीप स्थित हीरापुर जरवाय गौठान से हुई है। यहां समूह से जुड़ी 22 महिलाएं गोबर से प्राकृतिक पेंट एवं पुट्टी तैयार कर रही है। जिसका उपयोग भवनों के पोताई के लिए भी शुरू हो गया है। गोबर से तैयार यह प्राकृतिक पेंट की कीमत फिलहाल 230 रूपए प्रति लीटर है, जो मार्केट में कम्पनियों के पेंट के मूल्य से लगभग आधी है।

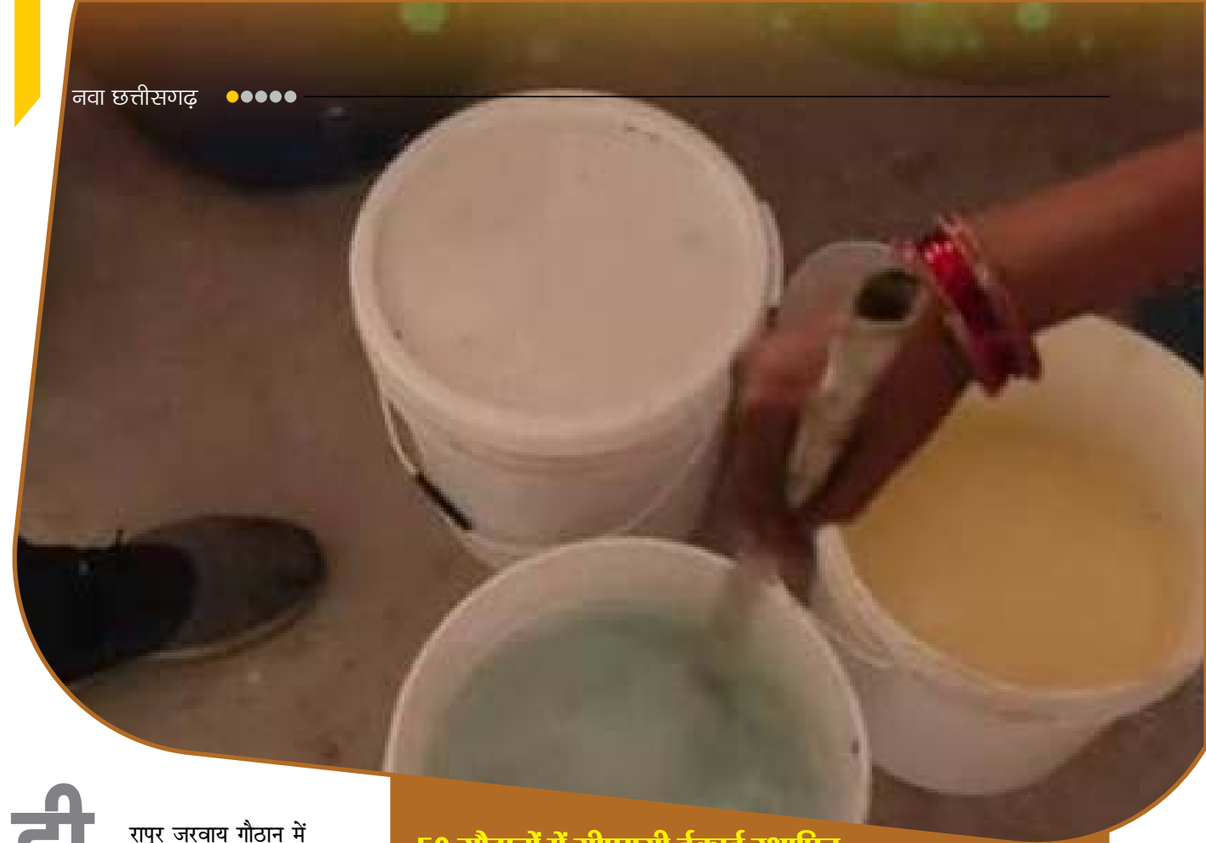

हीरापुर जरवाय गौठान में गोबर से प्राकृतिक पेंट बनाने के लिए 25 लाख रूपए की मशीनें लगाई गई हैं। समूह की अध्यक्ष धनेश्वरी रात्रे ने बताया कि गाय के गोबर पहले डी वाटर कलिंग मशीन में डाला जाता है और पानी मिलाकर घोल तैयार कर उसमें कई अन्य सामग्री मिलाई जाती है, फिर इन सब को हाई स्पीड डिस्पेंसर मशीन में मिक्स किया जाता है। इसके बाद पेंट और पुट्टी तैयार होती है। जरवाय गौठान में लगी मशीन से आठ घंटे में एक हजार लीटर पेंट तैयार किया जा सकता है। इसकी क्वालिटी ब्रांडेड कम्पनी के जैसी है। 50 किलो गोबर से 100 पेंट तैयार होता है। समूह की अध्यक्ष ने बताया कि जरवाय गौठान में गोबर से वर्मी कम्पोस्ट बनाने की शुरूआत की गई, इसके बाद समूह की महिलाओं ने गोबर से दीया गमला, मूर्ति, गुलाल बनाने सहित अन्य आयमूलक गतिविधियां शुरू की। गोबर से पेंट बनाने के लिए महिलाओं ने विधिवत प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। उनके द्वारा तैयार किए गए प्राकृतिक पेंट की डिमांड है। गौरतलब है कि गोबर से प्राकृतिक पेंट के निर्माण के लिए 21 नवम्बर 2021 को मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल की मौजूदगी में कुमाराप्पा नेशनल पेपर इंस्टीट्यूट जयपुर, खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय नयी दिल्ली और छत्तीसगढ़ राज्य गौ सेवा आयोग के मध्य हुआ था। राज्य में प्रथम चरण में गोबर से प्राकृतिक पेंट बनाने के लिए 75 गौठान चयनित किए गए हैं। गौठानों में गोबर से प्राकृतिक पेंट बनाने की मशीनें स्थापित किए जाने का काम तेजी से जारी है। कई गौठानों में मशीनें लग चुकी है, जहां शीघ्र ही उत्पादन शुरू होगा। प्रतिदिन 50 हजार लीटर तथा साल भर में 37 लाख 50 हजार लीटर प्राकृतिक पेंट का उत्पादन सम्भावित है। राज्य में गोबर से प्राकृतिक पेंट के निर्माण शुरू होने पर खुशी जाहिर करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने कहा कि गोधन न्याय योजना की शुरूआत करते हुए मैंने कहा था कि यह योजना हमारे लिए वरदान साबित होगी। हम इस योजना के माध्यम से एक साथ बहुत सारे लक्ष्य हासिल करेंगे। बहुत थोड़े से समय में ही मेरी वह बात सच साबित हो चुकी है। आज गोधन न्याय योजना हमारे गांवों की ताकत बन चुकी है। इससे पूरे देश में छत्तीसगढ़ को नयी पहचान मिली है। गौठान समितियों और महिला समूहों को आमदनी का एक नया जरिया मिला। पशुपालन और डेयरी व्यवसाय को नया जीवन मिला और दूध का उत्पादन भी बढ़ा। छत्तीसगढ़ में श्वेत-क्रांति की नयी शुरूआत हुई। इसी गोबर से हमारी बहनों ने दीये और तरह-तरह के चीजें बनाकर त्यौहारी-बाजार में भी अपने लिए जगह बनाई। 02 अक्टूबर 2021 से राज्य में गोबर से बिजली बनाने की शुरूआत बेमेतरा, दुर्ग और रायपुर जिले के तीन गोठानों से हो चुकी है।

50 गौठानों में सीएमसी ईकाई स्थापित

गोबर से प्राकृतिक पेंट के निर्माण का मुख्य घटक कार्बोक्सी मिथाईल सेल्यूलोज (सीएससी) होता है। सौ किलो गोबर से लगभग 10 किलो सूखा सीएमसी तैयार होता है। कुल निर्मित पेंट में 30 प्रतिशत मात्रा सीएमसी की होती है। वर्तमान में 25 गौठानों में पेंट निर्माण ईकाई तथा 50 गौठानों में सीएमसी ईकाई स्थापित की जा रही है। कृषि मंत्री रविन्द्र चौबे ने कहा कि छत्तीसगढ़ ही नहीं वरन पूरे देश में घर-आंगन एवं पूजा स्थल को पवित्र करने के लिए गोबर की लिपाई की परंपरा है। अब गोबर से बने प्राकृतिक पेंट से घर की पोताई होगी। प्राकृतिक पेंट को निर्माण कार्यों के एस.ओ.आर. में शामिल कर रहे है, ताकि शासकीय भवनों के रंग-रोगन में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग हो सके।

अधिकारी खाद-बीज वितरण व्यवस्था पर रखे निगरानी : कृषि मंत्री

कृषि एवं जल संसाधन मंत्री रविन्द्र चौबे ने खाद-बीज के भण्डारण एवं उठाव की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को सहकारी सोसायटियों एवं निजी क्षेत्रों में खाद-बीज के भण्डारण एवं वितरण के स्थिति पर कड़ी निगरानी रखने के साथ ही अधिकारियों को इसकी गुणवत्ता पर विशेष रूप से ध्यान देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसानों को खाद एवं बीज के लिए भटकना न पड़े, यह हर हाल में सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि किसानों द्वारा स्वर्णा एवं महामाया धान बीज की डिमाण्ड आ रही है। मंत्री ने बीज निगम के अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर उक्त बीज किसानों को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। बैठक में बताया कि खरीफ सीजन 2022 में जिले के सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से 52,300 मीटरिक टन उर्वरक वितरण का लक्ष्य है। उप संचालक कृषि ने बताया कि जिसके विरूद्ध अब तक यूरिया 19,903 मीटरिक टन, डीएपी 9876 मिटरिक टन, पोटाश 2508 मिटरिक टन, सुपरफास्फेट 3074 मिटरिक टन एवं एनपीके 7 मिटरिक टन इस प्रकार कुल 35368 मिटरिक टन उर्वरक का भण्डारण समितियों में किया गया है। जिसके विरूद्ध कृषकों द्वारा अब तक यूरिया 16,462 मिटरिक टन, डीएपी 8994 मिटरिक टन, पोटाश 1759 मिटरिक टन, सुपरफास्फेट 2549 मिटरिक टन एवं एनपीके 1 मिटरिक टन इस प्रकार कुल 29,765 मिटरिक टन उर्वरक का उठाव किया जा चुका है।?

इस तरह बीज वितरण का लक्ष्य

इसी प्रकार खरीफ सीजन 2022 हेतु जिले को 37,735 क्विंटल बीज वितरण का लक्ष्य है। जिले में अब तक धान 21,288.90 क्विंटल, कोदो 129.76 क्विंटल, अरहर 115.96 क्विंटल, सोयाबीन 495.90 क्विंटल एवं सन-ढेंचा 6.90 क्विंटल इस प्रकार कुल 22,037.42 क्विंटल बीज का भण्डारण हुआ है, जिसके विरूद्ध अब तक कृषकों द्वारा धान 17,774 क्विंटल, कोदो 7.53 क्विंटल, अरहर 51.48 क्विंटल, सोयाबीन 396.30 क्विंटल एवं सन-ढेंचा 6.90 क्विंटल इस प्रकार कुल 17,836.21 क्विंटल बीज का उठाव किया जा चुका है।

जनता से जो वादा किया था उसे पूरा किया सरकार ने मंत्री गुरू रूद्रकुमार

मंत्री गुरु रूद्रकुमार दुर्ग जिले के ग्राम खपरी और पाहरा में आयोजित लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने जनहित में अनेक घोषणाएं भी की। मंत्री गुरु रूद्रकुमार ने कहा कि साढ़े 3 साल में सरकार ने जनता से जो वायदे किए थे, उन्हें पूरा किया है। किसानों से किए गए वादे पूरे किए गए हैं। उन्हें फसल का पूरा दाम मिल रहा है। आम जनता से सरकार ने बिजली बिल हाफ का वादा किया था, जिसे पूरा किया है। तेंदूपत्ता संग्राहकों के लिए संग्रहण राशि बढ़ा दी गई है।

मंत्री गुरू रूद्रकुमार ने आगे कहा कि राज्य में स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम संचालित किए जा रहे हैं, जिससे आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में उच्च गुणवत्ता की निःशुल्क शिक्षा की सुविधा सुलभ हुई है। उन्होंने कहा कि सरकार ने सभी वर्गों के हितों को ध्यान में रखते हुए योजनाएं बनाई हैं। मैं लगातार आप सभी के बीच आता रहता हूं और आप लोगों से जो फीडबैक मिलते हैं आप लोग जनहित की जो बातें सामने रखते हैं उन पर क्रियान्वयन के निर्णय लिए जाते हैं। भविष्य में भी जनहित से जुड़े कार्य प्राथमिकता से किए जाएंगे।

मंत्री ने कहा कि अपने क्षेत्र में आम जनता से जो भी बुनियादी सुविधाएं संबंधित मांगे रखी जाती है, उन्हें पूरा करने की दिशा में कार्य किया जाता है। लोगों को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना तथा आजीविकामूलक गतिविधियों को बढ़ावा देना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि सरकार लगातार आम जनता के बीच जा रही है। भेंट-मुलाकातों के माध्यम से लोगों की समस्या से रू-ब-रू हो रही है। जमीनी स्तर पर हुए कार्यों का भौतिक परीक्षण भी कर रही है। अब तक हुए अभियान से पता लगता है कि लोगों को विकास कार्यों का लाभ मिला है तथा इससे उनके आर्थिक स्तर में तेजी से सुधार हुआ है। प्रशासनिक स्तर पर अच्छा काम हो रहा है, जिसका लाभ आम जनता को मिल रहा है। इस मौके पर ग्राम खपरी के आश्रित ग्राम घटियाखुर्द में बाबा जी के मंदिर के जीर्णोद्धार कराए जाने के साथ ही यहां यात्री प्रतिक्षालय तथा मंगल भवन बनाने की घोषणा की। उन्होंने नल जल योजना के क्रियान्वयन के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में सीसी रोड निर्माण करने और ग्राम पाहरा में श्री राम-जानकी मंदिर के लिए 5 लाख रुपये देने, गौठान का समतलीकरण कराए जाने, शीतला मंदिर प्रागंण में रंग-मंच का निर्माण और पाहरा में सीसी रोड निर्माण कराये जाने की घोषणा की।

आइए जानते है 3 सालों का रिपोर्ट कार्ड...

मंत्री अमरजीत भगत ने बनाया नया कीर्तिमान

छत्तीसगढ़ के खाद्य मंत्री अमरजीत भगत के कैबिनेट मंत्री के रूप में सेवा के 3 वर्ष पूर्ण हुए। इन 3 सालों में मंत्री भगत के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार को अनेक उपलब्धियां मिली। रिकॉर्ड धान खरीदी, बारदाने का मूल्य बढ़ा, 4 महीने का मुफ्त राशन, 3 महीने का राशन एडवांस, कुपोषण से मुक्ति, सार्वभौम पीडीएस, छत्तीसगढ़ की संस्कृति को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान।

वनोपज ही असल सम्पति

राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सवह्न से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोगों ने देखी छत्तीसगढ़ की संस्कृति : छत्तीसगढ़ राज्योत्सव में देश के 27 राज्यों और 6 केन्द्र शासित प्रदेशों के कलाकारों के साथ ही 7 देशों- एस्वातीनी, नाइजीरिया, उज्बेकिस्तान, श्रीलंका, यूगांडा, माली और फिलिस्तीन से आए लगभग 1500 कलाकारो ने भाग लिए थे. आदिवासियों की कला, संस्कृति के साथ-साथ उनके उत्पाद के प्रदर्शन एवं विक्रय का मेला लगा. जल-जंगल-जमीन जनजातीय समाज की आत्मा है. खेत-खलिहान, पशुधन और वनोपज ही असल सम्पत्ति है।

कोरोनाकाल में एक सच्चे जनप्रतिनिधि की पेश की मिसाल

मंत्री अमरजीत भगत सीतापुर विधायक है, व कोरोनाकाल के समय वो जशपुर जिले के प्रभारी मंत्री थे, मंत्री श्री भगत ने कोरोनाकाल में अपने विधानसभा क्षेत्र व प्रभार जिले के क्षेत्र में अपना निःस्वार्थ योगदान दिया। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में उन्होंने ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना की, व ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर, रेमडेसिविर दवाई, तथा जनता के हर सुविधा की चीजें उन तक पहुँचाई। लोक स्वास्थ्य केंद्रों में शहरी स्तर की स्वास्थ्य सेवायें और खाद्य सामग्री का निःशुक्ल वितरण भी किया।

आइए जानते है कैबिनेट मंत्री अमरजीत भगत के सेवा के 3 बछर

- छत्तीसगढ़ की संस्कृति, अस्मिता और संस्कारों को केंद्र में रखकर सरकार ने ह्लगढ़बो नवा छत्तीसगढ़ह्न का नारा दिया और प्रदेश को नई दिशा के साथ आगे बढ़ाने का काम किया.
- किसानों के बारदाने के मूल्य को भी 18 रूपए से बढ़ाकर 25 रूपए किया गया. किसानों ने धान खरीदी के लिए बारदाने उपलब्ध कराने के मामले में बढ़-चढ़कर सहयोग दिया. मिलर्स और पीडीएस की दुकानों से पुराने बारदाने की व्यवस्था कर धान खरीदी सुचारू रूप से जारी रही. इस साल किसानों से क्रय किए गए धान के एवज में उन्हें 19 हजार 83 करोड़ 97 लाख का भुगतान किया जा चुका है.
- राज्य के अंदर खाद्यान्न की व्यवस्था, क्वारेंटीन सेंटर की व्यस्था, राहत कैंप की व्यवस्था, बिना कार्ड वाले लोगों के लिए खाद्यान्न की व्यवस्था, समेत 3 महीने का राशन एडवांस में लोगों के घर पहुंचाया.
- कुपोषण मुक्ति अभियान में मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूपस्वादिष्ट चना व गुड़ वितरण आरंभ किया गया, लॉकडाउन के दौरान लोगों को भोजन की कमी न हो इसके लिए एडवांस में तीन महीने का राशन दिया गया।
- 2020 में यह राशन चार महीने के लिए बीपीएल हितग्राहियों को निःशुल्क प्रदान किया गया।
- अधिक से अधिक लोगों को सस्ता राशन देने के लिए सार्वभौम पीडीएस आरंभ किया गया, राशन कार्ड की संख्या 58 लाख से बढ़कर 70.80 लाख पहुँच गई।
- एपीएल परिवारों को 9.56 लाख सामान्य राशनकार्ड जारी किए गए।
- 3400 करोड़ रूपए का प्रावधान खाद्य सुरक्षा के लिए वित्तीय वर्ष 2022-23 में किया गया।
- कोरोना काल में 98 प्रतिशत हितग्राहियों पीडीएस एक माध्यम से खाद्यान्न सुरक्षा उपलब्ध कराई गई।
- 57 लाख अंत्योदय, प्राथमिकता, अन्नपूर्णा, एकल निराश्रित एवं निःशक्तजन कार्ड के माध्यम से चार माह का राशन निःशुल्क प्रदान किया गया।
- वादे के अनुरूप राशनकार्ड में खाद्यान्न की पात्रता बढ़ाई गई, 3 से 5 सदस्यीय परिवार को 35 किलो प्रतिमाह चावल दिया जा रहा है, 5 से अधिक सदस्य होने पर 7 किलो प्रति सदस्य की दर से अतिरिक्त चावल दिया जा रहा है।
- बस्तर संभाग में 17 रुपए किलो की दर से 2 किलो गुड़ प्रतिमाह दिया जा रहा है, 7.04 लाख राशनकार्डधारी परिवार लाभान्वित हो रहे हैं।
- अनुसूचित व माड़ा क्षेत्र में अंत्योद्य व प्राथमिकता राशन कार्ड पर 5 रूपए प्रतिकिलो की दर से 2 किलो प्रतिमाह चना वितरित किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ की फिल्म निर्माण नीति

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में व संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत के दिशा-निर्देश पर, आधुनिक फिल्म सिटी बनाने के लिए नया रायपुर में 115 एकड़ भूमि चिन्हित की गई है. छत्तीसगढ़ सरकार बाकायदा फिल्म विकास निगम बनाने की तैयारी कर रही है. इस नीति के तहत अगर किसी फिल्म की 50% शूटिंग छत्तीसगढ़ में होती है तो छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से फिल्म निमार्ता को एक करोड़ रुपए तक का अनुदान दिया जा सकता है. यही अनुदान फिल्म प्रोडक्शन कंपनी पर लागू होता है, अगर वह 20% छत्तीसगढ़िया कलाकारों को या छत्तीसगढ़ के मूल निवासियों को बतौर सहायक कलाकार या टेक्निकल टीम में शामिल करते हैं. जाहिर है इसका मकसद स्थानीय तौर पर कलाकारों और छत्तीसगढ़ के निवासियों को बेहतर मौके उपलब्ध कराना है. फिल्म निमार्ता अगर अपनी दूसरी फिल्मी छत्तीसगढ़ में शूट करते हैं तो 50% शूटिंग का हिस्सा छत्तीसगढ़ में फिल्माने पर राज्य सरकार की ओर से 1.25 करोड़ का अनुदान दिया जाएगा और यही अनुदान बढ़ कर दो करोड़ हो जाएगा अगर 75 फीसदी हिस्सा छत्तीसगढ़ में फिल्माया जाए और 20% स्थानीय या मूल निवासियों को मौका दिया जाए. इसी तरह फिल्म प्रोडक्शन कंपनी के लिए तीसरी और उसे आगे की फिल्में बनाने के लिए भी छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से अनुदान की घोषणा की गई है.

बलवीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम में अगस्त माह में होगा आयोजन

विजेंदर सिंह सहित अंतर्राष्ट्रीय पेशेवर मुक्केबाजों के होंगे मुकाबले

रंबल इन द जंगल के साथ रायपुर से ओलंपियन बॉक्सर विजेंदर सिंह करेंगे अपनी नई पारी की शुरूआत

छत्तीसगढ़ में पहली बार होगी प्रोफेशनल बॉक्सिंग इवेंट

छत्तीसगढ़ सरकार के सहयोग से ह्यरंबल इन द जंगलह्य नाम के इवेंट के साथ प्रोफेशनल बॉक्सिंग पहली बार रायपुर पहुंचेगी। यह आयोजन अगस्त में होने वाला है और इसमें अंतर्राष्ट्रीय पेशेवर मुक्केबाज और ओलंपिक पदक विजेता विजेंदर सिंह शामिल होंगे।

विजेंदर सिंह छत्तीसगढ़ में इस आयोजन को लेकर काफी उत्सुक हैं। वे कहते हैं कि ह्यह्यमैं रायपुर शहर में अपना अगला पेशेवर मुकाबला आयोजित करने की सहमति देने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल का बहुत आभारी हूं। यह इवेंट छत्तीसगढ़ के लोगों को इस खेल से परिचित कराने का एक शानदार अवसर है। उम्मीद है कि इससे नई पीढ़ी के युवा मुक्केबाजों को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।ह्ह्ह विजेंदर सिंह ने बताया कि वे वर्तमान में मैनचेस्टर में प्रशिक्षण ले रहे हैं और इस अगस्त में फिर से नई शुरूआत के लिए काफी उत्सुक हैं। गौरतलब है कि विजेंदर सिंह ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से मुलाकात कर छत्तीसगढ़ में बॉक्सिंग के खेल को बढ़ावा देने की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया था और उनसे छत्तीसगढ़ में प्रोफेशनल बॉक्सिंग इवेंट कराने का आग्रह किया था, जिस पर मुख्यमंत्री ने सहमति दी थी।विजेंदर सिंह वर्ष 2008 में ओलंपिक का कांस्य पदक जीतने वाले पहले भारतीय मुक्केबाज हैं। वे वर्ष 2015 में पेशेवर मुक्केबाज बने विजेंदर सिंह ने 8 नॉकआउट सहित 12 मुकाबले जीते हैं, एक मुकाबले में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। दुर्भाग्य से 12 मुकाबले जीतने के बाद उनकी जीत का सिलसिला गोवा में उनके आखिरी मुकाबले में टूट गया था। रंबल इन द जंगल भारत में उनके पेशेवर मुक्केबाजी करियर के दौरान उनका छठा मुकाबला होगा। इस इवेंट का आयोजन पर्पल गोट स्पोर्टेनमेंट एलएलपी द्वारा किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का कहना है कि वर्तमान और अगली पीढ़ी के लिए खेलों को बढ़ावा देना छत्तीसगढ़ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। विजेंदर सिंह के कद का कोई व्यक्ति, जिसने ओलंपिक में देश को गौरवान्वित किया है, उनका आना पूरे राज्य में युवा एथलीटों को प्रेरित करेगा। यह प्रो-बॉक्सिंग इवेंट बलबीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम, रायपुर में आयोजित की जाएगी। जिसमें विजेंदर सिंह के मुकाबले (हेडलाइन बाउट) के साथ अन्य अंतर्राष्ट्रीय पेशेवर मुक्केबाजों के मुकाबले भी होंगे।

ये संकेत बताते हैं कि अनुशासनहीन हो रहे हैं आपके बच्चे

हर माता पिता यह चाहते हैं कि उनके बच्चे को अनुशासन का महत्व पता हो परंतु आजकल बच्चे जितनी शैतानियां करते हैं उस हिसाब से उन्हें कुछ भी सिखाना काफी मुश्किल हो सकता है।

बहुत से बच्चों को किसी भी नियम से बांधना या अनुशासित करना बहुत टेड़ी खीर होती है। उनको देख कर साफ कहा जा सकता है कि इनके जीवन में अनुशासन की कमी है। हर मां बाप चाहते हैं कि उनका बच्चा दूसरों के सामने अच्छी तरह से व्यवहार करे सही तरह से पेश आए।आइए जानते हैं कुछ ऐसे संकेतों के बारे में जो बताते हैं कि आपके बच्चे में अनुशासनहीनता है और आपको इसे लेकर कुछ करना चाहिए।

1. आपका बच्चा न नहीं सुन सकता

अगर आपका बच्चा आपके किसी चीज को मना करने के बाद काफी गुस्सा हो जाता है और रोने जैसे नखरे करने लगता है तो समझ जाइए उन्हें यह अनुशासन किसी और ढंग से सिखाना चाहिए। इसके लिए आप उन्हें डायरेक्ट मना करने की बजाए कुछ अन्य तरीकों से मना कर सकते हैं। जैसे अगर वह एक चीज मांग रहे हैं तो आप उन्हें उसके दुष्परिणाम और उसकी बजाए किसी और चीज के लाभ गिनवा कर मना कर सकते हैं।

2. आपके बच्चा गुस्सैल है

अगर आपका बच्चा दूसरों के सामने काफी गुस्सैल रवैया रखता है और उसमें प्यार और सहानुभूति भावना की कमी है, तो आप उसे यह समझाएं कि दिल से अच्छा बनने में कितना मजा है। जब आपका बच्चा कुछ अच्छा काम करता है तो आपको उन्हें कोई तोहफा या फिर उनकी तारीफ कर सकते हैं। इससे प्रभावित हो कर वह आगे भी ऐसा ही काम करने की सोचेंगे।

3. आपका बच्चा दूसरों को हर्ट कर देता है

अगर आपका बच्चा दूसरों को हर्ट करने वाली बातें बोलकर भी दुखी नही होता तो आप भी अपने बच्चे से उसे हर्ट करने वाली बातें बोलें और फिर उससे पूछे कि उसे कैसा महसूस हुआ। इसके बाद वह खुद में बदलाव लाना जरूर शुरू कर देंगे

4. आपकी फीलिंग का बच्चे को कोई फर्क नहीं पड़ता

अगर आपका बच्चा आपके बारे में कुछ महसूस नहीं करता है और इस स्थिति में आप उन्हें डांटते हैं तो वे और अधिक ढीठ बन सकते हैं। इसलिए अपने शब्दों में थोड़ा बदलाव लाएं। अगर उन्होंने कोई गलती की है तो आप उन्हें बुरा बताने की बजाए अपने गुस्से को स्वीकार कर सकते है और उनसे थोड़ा सॉफ्टली बात कर सकते हैं।

5. अपनी गलतियों का दोष किसी और पर लगाते हैं

अगर आपका बच्चा कभी भी अपनी गलती नही मानता हैं और उसे दूसरों पर उसे थोपने की कोशिश करता है तो वह आगे भी ऐसा ही करेगा. उसे आपको समझाना होगा. अगर वह आपके सामने बोलना नही चाहता तो उसे समझाएं कि वह कागज पर भी अपनी बातें

एनएचएस के डॉक्टरों ने 'ऑर्गन केयर सिस्टम' मशीन बनाई है। मृत्यु की पुष्टि होते ही डोनर के दिल को निकालकर इस मशीन में रखकर 12 घंटे तक जांचा जाता है और उसके बाद ट्रांसप्लांट किया जाता है। ब्रिटेन के डॉक्टरों ने ऐसी मशीन बनाई जो मृत व्यक्तियों के दिल को दोबारा धड़का सकती है ब्रिटेन के डॉक्टरों ने पहली बार एक खास किस्म की मशीन का इस्तेमाल करके ऐसे दिल का सफलतापूर्वक ट्रांसप्लांट कर लिया है, जो धड़कना बंद कर चुके थे।

अब कभी नहीं थमेगी दिल की धड़कन

मृतकों के दिल को मशीन से जिंदा कर 6 बच्चों में ट्रांसप्लांट किया

यानी वो मृत घोषित हो चुके व्यक्तियों के थे। अब तक 6 बच्चों में ऐसे दिल को ट्रांसप्लांट किया जा चुका है। ये सभी बच्चे अब पूरी तरह स्वस्थ हैं। इससे पहले केवल उन व्यक्तियों का ही हार्ट ट्रांसप्लांट होता था, जो ब्रेन डेड घोषित होते थे। ब्रिटेन के नेशनल हेल्थ सर्विस (एनएचएस) के डॉक्टरों ने हार्ट ट्रांसप्लांट की तकनीक में एक कदम और आगे बढ़ा दिया है। केंब्रिजशायर के रॉयल पेपवर्थ अस्पताल के डॉक्टरों ने ऑर्गन केयर मशीन के जरिए मृत व्यक्तियों के दिल को जिंदा कर एक-दो नहीं, 6 बच्चों के शरीर में धड़कन पैदा कर दी।

यह उपलब्धि हासिल करने वाली यह दुनिया की पहली टीम बन गई है। एनएचएस के ऑर्गन डोनेशन एंड ट्रांसप्लांटेशन विभाग के डायरेक्टर डॉ. जॉन फोर्सिथ ने कहा- 'हमारी यह तकनीक सिर्फ ब्रिटेन ही नहीं, पूरी दुनिया में मील का पत्थर साबित होगी।

इस तकनीक से 12 से 16 साल के 6 ऐसे बच्चों को नया जीवन मिला, जो पिछले दो-तीन सालों से अंगदान के रूप में हार्ट मिलने का इंतजार कर रहे थे। यानी लोग अब मरणोपरांत ज्यादा हार्ट डोनेट कर सकेंगे। अब लोगों को ट्रांसप्लांट के लिए लंबे समय तक इंतजार नहीं करना पड़ेगा।'

ऑर्गन केयर सिस्टम: दिल को 24 घंटे रखकर जिंदा किया जाता है

एनएचएस के डॉक्टरों ने 'ऑर्गन केयर सिस्टम' मशीन बनाई है। मृत्यु की पुष्टि होते ही डोनर के दिल को तुरंत निकालकर इस मशीन में रखकर 12 घंटे तक जांचा जाता है और उसके बाद ही ट्रांसप्लांट किया जाता है। डोनर से मिले दिल को जिस मरीज के शरीर में लगाना है, उसके शरीर की आवश्यकतानुसार ऑक्सीजन, पोषक तत्व और उसके ग्रुप का ब्लड इस मशीन में रखे दिल में 24 घंटों तक प्रवाहित किया जाता है।

बच्चों में बढ़ते गुस्से को कम करने से पहले जान लें इसकी असली वजह

ई-लर्निंग अब पढ़ाई का स्त्रोत बनकर उभरा है। ऐसे में बच्चे ही नहीं, बल्कि शिक्षक भी पूरी तरह से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर निर्भर हैं। लेकिन बच्चों के लिए इस न्यू प्लेटफार्म के साथ पढ़ाई करना उतना भी आसान नहीं है। ऑनलाइन क्लासेस में बच्चों को अधिकतर कुछ समझ नहीं आता और ऐसे में वह पिछड़ते ही चले जाते हैं। जिसका असर उनके स्वभाव पर भी नजर आता है। कुछ बच्चों में अधिक गुस्सा करना व चिड़चिड़ेपन की शिकायत काफी बढ़ी हैं। तो चलिए आज हम इस पर विस्तावपूर्वक नजर डालते हैं-

स्क्रीन टाइम का बढ़ना

इन दिनों बच्चे अपने अकेलेपन, उदासी व चिंताओं को दूर करने के लिए इंटरनेट, सोशल मीडिया, वीडियो गेम खेलने, टेलीविजन, संगीत आदि में अधिक समय व्यतीत करते हैं। ऐसे में जब माता-पिता उनके स्क्रीन टाइम को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं, तो इसे वह अपने पर्सनल स्पेस का खत्म होना समझने लगते हैं। जिससे उनका गुस्सा बढ़ने लगता है। वैसे भी लंबे समय से घर में रहते हुए बच्चों में चिड़चिड़ेपन की भावना बढ़ने लगी है और ऐसे में अगर फोन या लैपटॉप उनसे छीन लिया जाए तो उनका एक बेहद ही उग्र रूप देखने को मिलता है।

क्या करें- बच्चे को सीधा फोन, टीवी या लैपटॉप इस्तेमाल करने से मना ना करें, बल्कि आप उन्हें इसके कुछ बेहतरीन विकल्प भी दें। मसलन जो गेम वो फोन में खेलते हैं, आप उन्हें वह रियल में लाकर दें। इससे उन्हें काफी अच्छा लगेगा और समय भी कब बीत जाएगा, इसका पता भी नहीं चलेगा।

ऑनलाइन क्लासेस कर रही हैं प्रभावित

भले ही ऑनलाइन क्लासेस के लिए बच्चों को जल्दी उठकर तैयारी ना करनी हो, लेकिन यही क्लॉसेस अब उन्हें नकारात्मक रूप से प्रभावित करने लगी है। ऑनलाइन क्लॉस में वह अपने दोस्तों के साथ बैठना, उनके साथ समय बिताना व मस्ती करना भी मिस करते हैं, जिससे भी उनके मन में नकारात्मकता बढ़ती है।

क्या करें- आपको यह समझना होगा कि बच्चे हमेशा कुछ नया सीखना चाहते हैं, लेकिन वे यह महसूस नहीं करना चाहते कि यह उन पर थोपा गया है। इसलिए, हर समय उन्हें निर्देश देने की बजाय इंटरनेट और सीखने को संतुलित करने के लिए एक शेड्यूल बनाने में उनकी मदद करें। आप उनकी नई चीजों को सीखने में मदद भी कर सकते हैं। वहीं, इंटरनेट पर निर्भरता से बचने के लिए पर्याप्त ब्रेक, नींद, पोषण और व्यायाम को प्राथमिकता दें।

एक से अधिक बच्चे होने पर मां को करना पड़ता है नींद से समझौता

हरदम सलाह हमने अक्सर देखा है कि पैरेंट्स बच्चों को हरदम कोई ना कोई सीख देते रहते हैं लेकिन लगातार ऐसा करने से उनका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होने लगता है और फिर इसका विपरीत प्रभाव उनके व्यवहार व बातचीत के तरीकों पर भी पड़ता है। इतना ही नहीं, कुछ बच्चे तो इस कदर प्रभावित होते हैं कि वह हर बात पर या तो रोने लगते हैं या फिर चिल्लाने लगते हैं। ऐसे में बच्चों में बदलाव को गंभीरता से लें।

क्या करें- आपको इस बात का ख्याल रखना होगा कि बच्चे हमारी सलाह से ज्यादा हमारे कार्यों से सीखते हैं। इसलिए, बच्चों को कुछ भी कहने से पहले आप खुद पर उसे लागू करें। वहीं इन दिनों स्कूलों में भले ही रेग्युलर क्लासेस शुरू ना हुई हों, लेकिन फिर भी स्कूल के दरवाजे माता-पिता, बच्चों, शिक्षकों के लिए खुल चुके हैं। ऐसे में बच्चों की मदद के लिए स्कूल की काउंसलिंग टीम की मदद लें। साथ ही, हमें अपने शब्दों और कार्यों के प्रति भी सावधान रहना होगा जो बच्चों में महामारी के कारण होने वाले घाव से बड़ा घाव छोड़ सकते हैं।

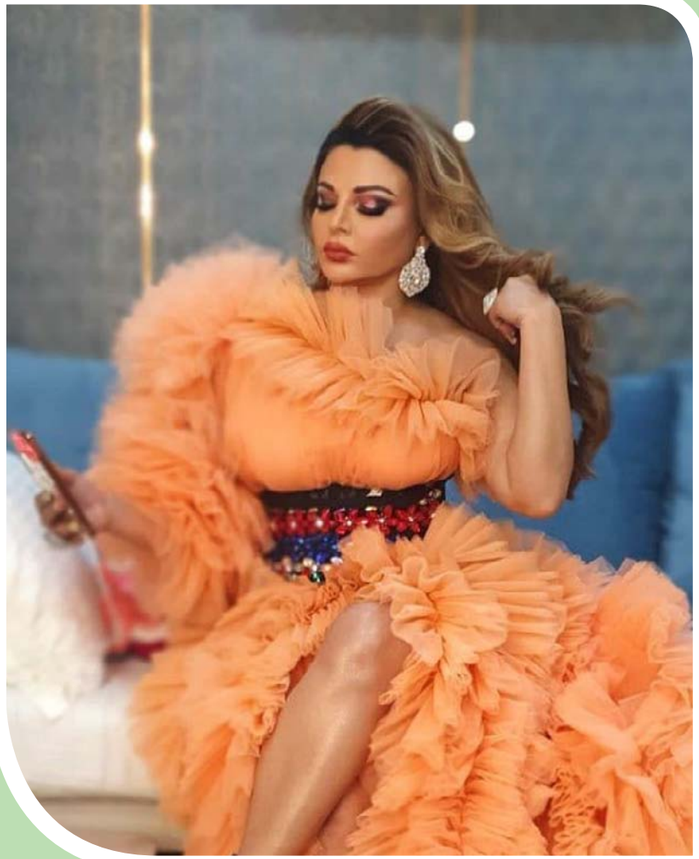

एग फ्रीजिंग एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से गर्भधारण करने वाले अंडों को सुरक्षित रखा जा सकता है। आज के समय में कई ऐसी सेलिब्रिटी हैं जो एग फ्रीज के माध्यम से अपने अंडों को सुरक्षित रख रहे हैं, इनमें राखी सावंत भी शामिल हैं।

राखी सावंत समेत कई सेलिब्रिटीज ने चुना एग फ्रीज का रास्ता

कई ऐसे सेलिब्रिटी हैं, जिन्होंने अपने एग फ्रीज करवा लिए हैं। ये एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें महिलाएं गर्भधारण करने वाले अंडों को सुरक्षित रखने के लिए फ्रीज करवाती हैं। आज के समय में महिलाएं पेरेंट बनने से पहले अपने करियर को प्राथमिकता देती हैं, ऐसे में ज्यादा उम्र में पेरेंटहुड अपनाना सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है। आधुनिक तकनीक में एक फ्रीजिंग यानि Oocyte CryopreservÔtio»»f की मदद से अपने एग को फ्रिज किया जा सकता है।

क्या है एग फ्रीजिंग?

एग फ्रीजिंग एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें महिलाएं गर्भधारण करने वाले अंडों को फ्रीज करवाती हैं और जब वे पूरी तरीके से प्रेगनेंसी के लिए तैयार हो जाती हैं तब अंडों को निकालकर संग्रहित किया जाता है और उन्हें पिघला कर एक प्रयोगशाला में शुक्राणु के साथ निषेचित किया जाता है और भ्रूण को गर्भाशय में डाला जाता है।

क्यों जरूरी है एग फ्रीजिंग?

जन्म के बाद महिलाओं के अंडाशय की संख्या मिलियंस में होती है। लेकिन युवावस्था तक पहुंचते-पहुंचते यह संख्या आधी रह जाती है। ऐसे में आपको पता होना चाहिए कि पुरुषों में शुक्राणु हर दिन बनते हैं लेकिन महिलाओं में अंडे दोबारा नहीं बनते। उम्र बढ़ते ही अंडों की संख्या काफी कम हो जाती है। यही कारण होता है कि बाद में महिलाओं को प्रेगनेंसी के दौरान परेशानी होती है। इसलिए इस समस्या को रोकने के लिए एग फ्रिज का सहारा लिया जाता है। इस प्रोसेस के माध्यम से अंडों को सुरक्षित रखते हैं, जिससे महिलाएं उन अंडों को बर्बाद होने से बचा सकें और बाद में उनका इस्तेमाल कर सकें।

एग प्रोसेस कब करवा सकते हैं?

- जैसा कि हमने पहले भी बताया कि यदि आप अपने भविष्य पर ध्यान देना चाहते हैं लेकिन आपको ये डर है कि आगे चलकर प्रेगनेंसी में दिक्कत आ सकती है तो ऐसे में आप एग फ्रीज करवा सकते हैं।
- यदि आपको कैंसर जैसी घातक बीमारी है तो ऐसे में कीमोथेरेपी के कारण आपके अंडे खराब हो सकते हैं। ऐसे में आप एग फ्रीजिंग की मदद ले सकते हैं।
- यदि आप किसी और गंभीर बीमारी से ग्रस्त हैं तब भी आप अपने अंडों को बचाने के लिए एग फ्रीजिंग का सहारा ले सकती हैं।

पेट में गुड़गुड़ की आवाज की वजह हैं ये बीमारियां

पेट के अंदर से कई बार गुड़गुड़ की आवाज आती रहती है। मेडिकल भाषा में इसे स्टोमक ग्रोलिंग नाम से जाना जाता है। अक्सर इस तरह की आवाज को भोजन पचने से जोड़कर देखा जाता है। आमतौर पाचन के दौरान इस तरह की आवाज पेट और आंतों के भीतर से आती है। चूंकि आंतें खाली होती हैं इसलिए जब खाना-पानी वहां से गुजरता है, तो ऐसी आवाज आती है। इसे अक्सर सामान्य माना जाता है। हालांकि बार-बार असामान्य रूप से पेट से तेज आवाज आना पाचन तंत्र के भीतर किसी गंभीर स्थिति का संकेत हो सकती है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

जब भोजन छोटी आंत में पहुंचता है, तो शरीर खाद्य पदार्थों को तोड़ने और पोषक तत्वों के अवशोषण के लिए एंजाइम जारी करता है। इस पाचन की इस क्रिया के दौरान ऐसी आवाज आ सकती है। भूख लगना इसका दूसरा बड़ा कारण हो सकता है। कई बार देर तक कुछ नहीं खाने से शरीर नियमित रूप से पाचन की प्रक्रिया शुरू कर देता है। ऐसा माना जाता है कि एक बार में इस तरह की आवाज करीब 20 मिनट तक आ सकती है और खाना खाने तक हर घंटे फिर से शुरू हो सकती है।

पेट में आवाज आने के सामान्य और गंभीर कारण

भूख लगना और पाचन होना इसके दो सामान्य कारण हैं। हालांकि इस तरह की आवाज के पीछे कुछ वजह भी हो सकती हैं। क्रोहन रोग, फूड एलर्जी, दस्त, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल ब्लीडिंग, संक्रामक आंत्रशोथ और बड़ी आंत में सूजन जैसे गंभीर बीमारियों के कारण भी ऐसी आवाज आ सकती है, जिसके लिए तुरंत जांच करना जरूरी है। अगर आपको आवाज के साथ पेट में कुछ और गड़बड़ी भी महसूस हो रही है, तो बेहतर है आप अपने डॉक्टर से संपर्क करें. चलिए जानते हैं पेट की आवाज को रोकने के उपाय क्या हैं।

पानी पिएं

एक गिलास पानी पीना पेट की आवाज को रोकने का एक प्रभावी उपाय हो सकता है, खासकर अगर समय पर कुछ खाना संभव न हो। पानी पेट भरने के साथ-साथ पाचन क्रिया में भी मदद करता है। ये दोनों क्रियाएं पेट को बढ़ने से रोकने या उसकी आवाज को कम करने में मदद करती हैं। बेहतर रिजल्ट के लिए पूरे दिन में धीरे-धीरे पानी पीना चाहिए।

उसी समय कुछ खाएं

पेट खाली होने पर ऐसा हो सकता है इसलिए यह एक संकेत है कि पेट को कुछ चाहिए। एक छोटा भोजन या नाश्ता खाने से अस्थायी रूप से आवाज बंद हो सकती है। पेट भरा रहने से पेट बढ़ने की मात्रा कम हो जाती है।आप दिन में तीन बार बड़े भोजन के बजाय दिन में 4 से 6 छोटे भोजन ले सकते हैं।

हर्बल टी

पुदीना, अदरक, सिंहपर्णी जड़ और सौंफ से बनी हर्बल चाय आपके पाचन में मदद कर सकती है और आपकी आंतों की मांसपेशियों को आराम दे सकती है। कैमोमाइल पेट की ऐंठन को कम करने के लिए बहुत अच्छा है, अदरक सूजन को कम करता है और पुदीना गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल तनाव के लक्षणों को दूर करने में सक्षम है।

लहसुन

लहसुन में एलिसिन नामक तत्व होता है। ऐसा माना जाता है कि यह रसायन गैस्ट्रिटिस वाले लोगों की मदद कर सकता है। एलिसिन पेट की सूजन को कम करके मदद करता है। अपने पाचन में मदद करने के लिए सुबह सबसे पहले लहसुन का कच्चा टुकड़ा खाएं।

पाचन को दुरुस्त रखने वाली चीजें खाएं

पाचन को बढ़ावा देने और पेट को दुरुस्त रखने के लिए के लिए अपने खाने में दही, क्विनोआ, चिया सीड्स, बीट्स, अदरक, किमची और मछली आदि को शामिल करना चाहिए। इसके अलावा, हाइड्रेटेड रहना न भूलें, क्योंकि स्वस्थ पाचन के लिए पानी की आवश्यकता होती है।

कॉफी की जगह ग्रीन टी ट्राई करें

कॉफी एक अम्लीय भोजन है जिसके अधिक सेवन से पेट खराब हो सकता है। इसके बजाय एक कप ग्रीन टी पीने अच्छा विकल्प है। यह सूजन और पेट की गैस को दूर कर सकता है। यह पेट के अल्सर में भी सहायक है। ग्रीन टी में हेल्दी बायोएक्टिव यौगिक और एंटीऑक्सिडेंट भी होते हैं।

रिलेशनशिप

> इस बात में कोई दोराय नहीं हैं कि जब किसी से प्यार होता है, तो आप जल्द से जल्द उनसे अपने दिल की बात कह देना चाहते हैं। आप उन्हें बता देना चाहते हैं कि आप उनसे कितना प्यार करते हैं।

प्यार का इजहार करने से पहले दें ध्यान

लेकिन एक रिश्ते को चलाने के लिए सिर्फ प्यार ही काफी नहीं होता बल्कि उस शख्स से जुड़ी कुछ खास बातें भी शामिल होती हैं। इसीलिए प्रपोज करने से पहले कुछ खास बातों पर ध्यान जरूर देना चाहिए, ताकि बाद में आपको पछताना न पड़े। हम आपको कुछ ऐसी बातों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनपर अक्सर आपका गौर नहीं जाता है।

जिससे भी आप प्यार करते हैं, उसके बारे में आपको सब पता होना बेहद जरूरी है। अफने दिल की बात कहने से पहले, आपको उनके बारे में कुछ जरूर बातें पता कर लेनी चाहिए जैसे उनके घर में कौन-कौन है। उनका प्रोफेशन क्या है। साथी के नजरिए को पहले जानने का प्रयास करें, जिससे आगे चलकर आपको परेशानी का सामना न करना पड़े।

कई बार आप तो किसी को प्रपोज करने का मन बना रहे होते हैं, लेकिन वह खुद किसी और के साथ रिलेशनशिप में होते हैं, तब आपको तकलीफ पहुंचती है। इससे अच्छा है कि आप पहले ही उनसे इस बारे में बात कर लें और जान लें कि वह सिंगल है भी या नहीं। अगर आप उनके अच्छे दोस्त हैं, तो उनके स्टेटस के बारे में जानने से आपकी फ्रेंडशिप नहीं खराब होगी।

आप जिससे भी प्यार करते हैं, उन्हें प्रपोज करने से पहले उनके साथ दोस्ती का रिश्ता बनाएं। इससे आपको उन्हें समझने में मदद मिलेगी और आपको उनकी पसंद-नापसंद के बारे में भी पता चल सकेगा। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता होता है, जो पार्टनर्स के बीच मजबूती लाता है। ऐसे में फ्रेंडशिप के बाद जब आप उन्हें प्रपोज करेंगे, तो हो सकता है कि वे आपके भावनाओं को आसानी से समझ सकें।

आप किसी से प्यार करते हैं, लेकिन वह अगर आपके लिए वही फील नहीं करते हैं फिर भी आप उनकी रिस्पेक्ट करना न भूलें। आपको पता होना चाहिए कि भले ही कोई आपसे प्यार नहीं करता, लेकिन उनका सम्मान करना आपका पहला फर्ज है। उनकी भावनाओं की कद्र करना आपकी पहली जिम्मेदारी है। ये आपको एक अच्छा इंसान बनाता है, जो शायद बाद में उन्हें आपकी फीलिंग का एहसास करा दे।

कबाब नाम सुनते ही मुंह में पानी आ जाता है, लेकिन बहुत से लोगों को लगता है कि कबाब सिर्फ नॉनवेज से बनाया जा सकता है। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नही है। वेजिटेबल कबाब खाने में जीतना स्वादिष्ट होता है उसे बनाना भी उतना ही आसान होता है। ये वेजिटेबल कटलेट की तरह ही होता है जिसे कबाब का शेप देकर बनाया जाता है। चाय के साथ या फिर शाम को नाश्ते में कबाब एक परफेक्ट स्नैक हो सकता है। आइए जानते हैं इस बेहतरीन डिश की रेसिपी क्या है।

घर पर बनाएं हरा भरा कबाब

मुख्य सामग्री

- 1 कप Ôs required,chopped पालक

मुख्य पकवान के लिए

- 3/4 कप Ôs required,chopped हरी सेम
- 1/2 कप Ôs required,chopped गाजर
- 1/2 छोटी चम्मच जरूरत के अनुसार जीरे के बीज
- 1 छोटी चम्मच जरूरत के अनुसार नमक
- 3 - जरूरत के अनुसार हरी मिर्च
- 1/2 छोटी चम्मच जरूरत के अनुसार गरम मसाला पाउडर
- 1 कप भीगा हुआ चने

हरा भरा कबाब बनाने की विधि

- हरा भरा कबाब बनाने के लिए सबसे पहले भीगे हुए चने दाल को मिक्सी में डालकर चिकना पीस लें। ध्यान रहे कि पेस्ट तैयार करते समय पानी ना डालें नही तो पेस्ट पतला हो जाएगा और कबाब सही से नही बनेंगे।
- चना दाल पीसकर तैयार कर लेने के बाद उसे एक बाउल में निकाल कर रख दें और उसी मिक्सर में बींस और गाजर डालकर दरदरा पीस लें। अब तैयार किए सब्जी के पेस्ट को एक पैन में डालकर उसे चम्मच चलाते हुए भून लें। अब उसी पैन में पालक डालकर उसे भी अच्छे से भून लें।
- तैयार सब्जी के मिश्रण को चना दाल के पेस्ट में डालकर अच्छे से मिलाएं।
- सब्जी और चना दाल पेस्ट को अच्छे से मिला लेने के बाद उसमें जीरा, हरी मिर्च, नमक और गरम मसाला डालकर सभी को अच्छे से मिला लें।
- तैयार मिश्रण से कबाब का शेप देते हुए कबाब तैयार करते हुए एक प्लेट में रख दें।
- अब एक पैन लेकर उसमें तेल डालकर उसे गर्म करने के लिए रख दें, जब पैन गरम हो जाए तब उसमे तैयार कबाब को डालें और मध्यम आंच में पकने दें। एक तरफ जब गोल्डन ब्राउन हो जाए तब हल्के हाथों से पलटते हुए कबाब के दूसरे तरफ को भी सेंक लें। ध्यान रहे कबाब पलटते समय हल्के हाथों का ही इस्तेमाल करें नही तो कबाब टूट सकते हैं। तैयार है गरमागरम कबाब, प्याज के छल्ले से इसकी गार्निशिंग करके हरी चटनी के साथ सर्व करें।

माह : जुलाई 2022

राशिफल

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए जुलाई माह की शुरूआत से लेकर दूसरे सप्ताह तक का समय अत्यंत ही शुभ है। इस दौरान करिअर और कारोबार से जुड़ी कोई शुभ सूचना प्राप्त होगी। लंबे समय से रोजी-रोजगार की तलाश में भटक रहे लोगों को मनचाहा अवसर प्राप्त हो सकता है। यह समय परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे लोगों के लिए भी शुभ साबित होगा। घर में परिजनों का पूरा और कार्यक्षेत्र में सीनियर का पूरा सहयोग मिलेगा।

वृष

वृष राशि के जातकों की जुलाई महीने की शुरूआत घर-पारिवार से जुड़ी जिम्मेदारियों और अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यों को करते हुए बीतेगी। किसी इष्टमित्र या प्रभावी व्यक्ति की मदद से लंबे समय से अटके काम पूरे हो सकते हैं। इस दौरान आपका पूरा फोकस परिवार की जरूरतों को पूरा करने और संबंधों को सुधारने में रहेगा। नौकरीपेशा लोगों के लिए भी यह समय शुभता और सफलता लिए रहने वाला है।

मिथुन

मिथुन राशि के जातकों को जुलाई के महीने में समय,संबंध और धन का बहुत ज्यादा प्रबंधन करने की जरूरत रहेगी। यदि आप ऐसा करने में कामयाब रहे तो आपको माह की शुरूआत में ही व्यवसाय में मनचाहा लाभ होगा। पूर्व में किसी योजना में किए गए निवेश से मनाचाहा लाभ होगा। नौकरीपेशा लोगों की आय के अतिरिक्त स्त्रोत बनेंगे। किसी इष्ट-मित्र या फिर प्रभावी व्यक्ति की मदद से करिअर को आगे बढ़ाने का बेहतरीन अवसर प्राप्त होगा।

कर्क

कर्क राशि के जातकों को जुलाई महीने के पूर्वार्ध में धन और सेहत दोनों पर बहुत ज्यादा ध्यान देने की जरूरत रहेगी। माह की शुरूआत में आपको धन का प्रबंधन करके चलना होगा,अन्यथा आपका बजट गड़बड़ा सकता है। माह की शुरूआत में की गई फिजूलखर्ची बाद में आपके लिए कर्ज लेने का बड़ा कारण बन सकती है। इस दौरान सुख-सुविधा से जुड़ी चीजों पर जेब से अधिक धन खर्च हो सकता है।

सिंह

सिंह के जातकों के लिए जुलाई का महीना काफी उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। माह की शुरूआत में आपको शुभता और सफलता दोनों का साथ मिलेगा। आपके इष्टमित्र और रिश्तेदार आपके प्रत्येक काम में सहयोग करते नजर आएंगे। इस दौरान प्रेम संबंध में भी हंसी-खुशी फल बीतेंगे लेकिन माह के दूसरे सप्ताह में आपको किसी के साथ हास-परिहास करते समय बेहद सावधानी बरतनी है।

कन्या

कन्या राशि के जातकों को जुलाई महीने की शुरूआत में करिअर-कारोबार में अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे। इस दौरान न सिर्फ व्यवसाय में मनचाहा लाभ होगा बल्कि कारोबार में विस्तार का सपना भी साकार होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने सीनियर और जूनियर दोनों का सहयोग प्राप्त होगा। आय के नए स्त्रोत बनेंगे। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को कोई अच्छी खबर सुनने को मिल सकती है।

तुला

तुला राशि के जातकों के लिए जुलाई का महीना अत्यंत ही शुभ और सफल होने जा रहा है। माह की शुरूआत में आपको घर और बार दोनों जगह लोगों का सहयोग और समर्थन मिलेगा। कार्यक्षेत्र में सीनियर आपके कामकाज की तारीफ करेंगे। उच्च पद की प्राप्ति या फिर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी मिल सकती है। माह के उत्तरार्ध का थोड़ा सा समय छोड़ दिया जाए तो पूरा मास व्यवसाय की दृष्टि से उत्तम कहा जा सकता है।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों लिए जुलाई माह का पूर्वार्ध कुछ एक परेशानियों और चिंताओं को लिए रहने वाला है। इस दौरान आपका अधिकांश समय घर-परिवार से लेकर कामकाज की परेशानियों को दूर करने में बीतेगा। जुलाई माह के पहले सप्ताह में भूमि-भवन आदि को लेकर परिवार के सदस्यों से तकरार हो सकती है। स्वजनों से मनचाहा सहयोग न मिल पाने पर मन थोड़ा खिन्न रहेगा।

धनु

धनु राशि के जातक यदि जुलाई महीने के पूर्वार्ध में अपने समय और ऊर्जा का प्रबंधन करने में कामयाब रहते हैं तो उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में मनचाही सफलता प्राप्त होगी। इसके साथ इन्हें अपनी वाणी और व्यवहार पर भी नियंत्रण रखना होगा। घर-परिवार और कार्यक्षेत्र में लोगों की छोटी-मोटी बातों को इग्नोर करना ही बेहतर रहेगा।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए जुलाई का महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस महीने आपको अपनी सेहत और संबंध दोनों पर बहुत ध्यान देने की जरूरत रहेगी। माह की शुरूआत में ही किसी प्रिय के साथ गलतफहमी या विवाद होने के कारण मन खिन्न रहेगा। इस दौरान आपको घर-परिवार और कार्यक्षेत्र में बहुत सोच-समझकर बात करने की जरूरत रहेगी। क्रोध करने और दूसरों को अपशब्द कहने से बचें।

कुम्भ

कुंभ राशि के जातकों के लिए जुलाई माह का पूर्वार्ध का समय मनचाही सफलता और नए अवसर प्रदान करने वाला रहेगा। इस दौरान आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे,जिससे आपके भीतर आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। माह की शुरूआत में सुख-सुविधा से जुड़ी किसी चीज के क्रय से घर में खुशियों का माहौल रहेगा। इस दौरान आपको कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर दोनों का खूब सहयोग मिलेगा।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए जुलाई का महीना अत्यंत ही शुभ साबित होने जा रहा है। माह की शुरूआत में संतान पक्ष की किसी बड़ी उपलब्धि से परिवार में खुशियों का माहौल बना रहेगा। इस दौरान घर में मांगलिक कार्यक्रम संपन्न हो सकते हैं। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान की यात्रा भी संभव है। यदि आप लंबे समय से भूमि-भवन या वाहन आदि लेने की सोच रहे थे तो इस महीने आपकी यह कामना पूरी हो सकती है।

सबको कहने का मौका
सबकी सुनकर फैसला

योजनाएं बनाने का लोकतांत्रिक तरीका

श्री भूपेश बघेल, मान. मुख्यमंत्री
के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार का लोक-अभियान

R.O NO- 12076/21